इब्रानियों के नाम

पुनर्कथित,
व्याख्यायित,
आज के लिए।

GOOD NEWS

इब्रानियों के नाम

पुनर्कथित, व्याख्यायित, आज के लिए।

Hans-Jörg Ronsdorf

पूरा हुआ!

Tetelestai

यूहन्ना 19:28-30

पुस्तक का परिचय: इब्रानियों के नाम पत्री को मैंने अपने शब्दों में फिर से कहा है, यानी समझाते हुए प्रस्तुत किया है। मानो मैं उसे थोड़े और सटीक शब्दों में समझाने या उसकी व्याख्या करने का प्रयास कर रहा हूँ। इस तरह जो पाठ बना है, वह किसी सामान्य बाइबल अनुवाद की तुलना में लगभग तीन गुना शब्दों का है।

यह प्रस्तुति पत्री को बेहतर समझने में सहायता के रूप में है। यह बाइबल के पाठ का स्थान नहीं लेती। इसलिए नए नियम की इस पत्री को सदा किसी सामान्य बाइबल अनुवाद में भी पढ़िए। इससे मेरा अर्थ ऐसे अनुवादों से है जैसे आइनहाइट्स-अनुवाद (Einheitsübersetzung), लूथर-अनुवाद (Luther), एल्बरफ़ेल्डर (Elberfelder) या श्लाख़्टर (Schlachter) अनुवाद (जर्मन बाइबल अनुवाद)।

पहला संस्करण जनवरी 2026, Albis 6½, 87477 Sulzberg, जर्मन संस्करण का ISBN 978-3-9826027-0-7

ऑर्डर, प्रश्न, संपर्क: hj-ronsdorf@t-online.de

इब्रानियों के नाम

यह असाधारण पत्री नए नियम[1] की किसी भी दूसरी पत्री के समान नहीं है। एक “missing link” (बीच की कड़ी) की तरह वह पुराने और नए नियम के बीच खड़ी है। दूसरे शब्दों में: वह एक टीका है, जो इस्राएल के इतिहास और बलिदान की उपासना को उठाती है। वह उसे देखती है और उसकी तुलना यीशु मसीह के द्वारा मिले छुटकारे की नई और कहीं बेहतर वास्तविकता से करती है। इस्राएलियों के लिए, विशेषकर पहली शताब्दी के उन यहूदियों के लिए जो मसीहा यीशु पर विश्वास करते थे, यह बहुत ही महत्वपूर्ण था। वे अपने इतिहास और अपनी आराधना को अच्छी तरह जानते थे। शायद पाने वालों में पहले के याजक और लेवी भी थे। **क्या यीशु, जो क्रूस पर चढ़ाया गया, सचमुच मसीहा था – ऐसा वे कभी-कभी पूछते और उस पर संदेह करते रहे होंगे? क्या उसकी लहूलुहान क्रूस की मृत्यु उद्धार दे सकती थी, और यहाँ तक कि एक अंतिम बलिदान हो सकती थी?**

क्या इब्रानियों को लिखी गई एक प्राचीन पत्री आज पश्चिम में हमसे कुछ कहती है? विशेषकर तब, जब उसके विषय इब्रानी बाइबल में, जिसे पुराना नियम कहते हैं, जड़ पकड़े हुए हैं? जब बात स्वर्गदूतों, जंगल, वाचा, लहू और बलिदान की हो? निश्चय ही, नहीं तो यह पत्री नए नियम में जगह न पाती। कुछ लोग कहते हैं कि यह पत्री रोमियों की पत्री जितनी ही महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, यदि यह न होती तो मसीही विश्वास में बहुत कुछ कम रह जाता।

1. यहाँ से आगे संक्षेप में “न. नि.”।

सुसमाचार पर एक यहूदी दृष्टि

यहूदी मसीहियों की कल्पना कीजिए, जिनमें से कुछ शायद यरूशलेम के मन्दिर के पहले के याजक भी थे। हम नहीं जानते कि वे भौगोलिक रूप से कहाँ थे, ठीक वैसे ही जैसे हम नहीं जानते कि यह पत्री किसने लिखी। यहूदियों के लिए संसार बहुत पहले ही बदल चुका था। वाचा का सन्दूक बहुत समय से मन्दिर के परमपवित्र स्थान में नहीं था। और पत्री के समय वह मन्दिर अभी खड़ा था या नहीं, इस पर विद्वानों में मतभेद है।

बलिदान की सेवा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा ठहराई थी। मन्दिर, उपासना-विधि, यरूशलेम, एक मसीहा की प्रतीक्षा, यह सब इस छोटी जाति और हर एक यहूदी की राष्ट्रीय पहचान था। अब कुछ लोग यीशु पर विश्वास करने लगे थे, जिसमें उन्होंने मसीहा को पहचान लिया था। इससे उनके लिए सब कुछ बदल गया। बाकी सब यहूदियों ने इस यीशु को अस्वीकार किया, आखिर उन्होंने ही उसे क्रूस पर चढ़ाया था। इस क्रूस पर चढ़ाए गए के पक्ष में खड़ा होना जीवन को आसान नहीं बनाता था। भेदभाव और सताव शुरू हो गए। ये यहूदी मसीही अब मन्दिर की किसी दिखाई देने वाली, भौतिक आराधना पर अपना ध्यान नहीं लगा सकते थे। मसीहा के अनुयायी होने के कारण वे अब यहूदी जाति का भाग नहीं रहे। उनका दृढ़ विश्वास, उनकी नई पहचान और उनका मसीहा पूरी तरह विश्वास की बात थे, कुछ भी छूने योग्य नहीं, कुछ भी अब दिखाई देने वाला नहीं।

इस तनाव भरी स्थिति में, जो कई वर्षों से चली आ रही थी, यह परीक्षा बढ़ती गई कि मसीहा पर विश्वास छोड़ दें और पुरानी और दिखाई देने वाली बातों में लौट जाएँ। जीवन फिर आसान हो जाता, धर्म फिर जाना-पहचाना होता, यहूदी जाति फिर उनका घर होती और वे फिर आराधनालय का भाग होते।

इसलिए यह पत्री धीरज से टिके रहने और डटे रहने का साहस देती है। वह दिखाती है कि स्वर्गीय आराधना और स्वर्गीय नगर कितने बेहतर और बड़े हैं, हाँ, पूरी नई वाचा। पत्री विश्वास को छोड़ देने और उससे फिर जाने के विरुद्ध कड़ी चेतावनी देती है, क्योंकि उसके बाद यह खतरा रहता है कि मनुष्य फिर कभी लौटकर न आए।

लेखक पत्री पाने वालों के हृदयों के लिए संघर्ष करता है: बहुत सी तुलनाओं से, इतिहास की याद दिलाकर और नई वाचा की आशीष और धन के एक अनोखे वर्णन से।

आज कैसा है? मसीही युग के बाद का समय शुरू हो चुका है। यीशु का खुलकर अंगीकार करने वाला अनुयायी एक stranger है, एक परदेशी। यदि कोई अपने आप को ढालता नहीं, तो यीशु को उद्धार देने वाला एकमात्र जन और बाइबल को जीवन का मापदंड मानकर अंगीकार करना सचमुच कठिन हो जाता है। इसलिए इस पत्री का संदेश आज हमारे पश्चिमी समाज में बिलकुल सामयिक है।

मुख्य शब्द और विषय

हम गैर-यहूदियों के लिए, और ऐसे पाठकों के लिए जो इस्राएल के इतिहास और विधियों से बहुत कम परिचित हैं, आगे कुछ परिचय के विचार दिए जा रहे हैं, उन शब्दों के बारे में जो पत्री में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

स्वर्गदूत

पत्री के आरंभ में, पहले दोनों अध्यायों में, यीशु की तुलना कई बार स्वर्गदूतों से की जाती है। लेखक का उद्देश्य प्रभावशाली ढंग से यह दिखाना है कि वह हर स्वर्गदूत से बड़ा है। वह स्वर्गदूतों के समान कोई सृजा हुआ प्राणी नहीं है। तब भी नहीं, जब परमेश्वर पुत्र मनुष्य बना। अर्थात् मरणशील हुआ और क्रूस पर मार भी डाला गया। स्वर्गदूत “सामर्थ्य में बलवन्त” हैं, वे मनुष्यों से अधिक शक्तिशाली हैं। वे आत्माएँ हैं, जो हम माँस और लहू के मनुष्यों की तरह भौतिकता और मृत्यु के अधीन नहीं हैं। मसीहा यीशु स्वर्गदूतों से छोटा बना, क्योंकि वह मनुष्य बना और सचमुच मरा। पर परमेश्वर ने उसे जिलाया, मरे हुओं में से निकाल लाया और स्वर्गदूतों से ऊपर उठाया। **परमेश्वर पुत्र** के रूप में वह सदा से ऐसा ही था। वह दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले संसार का सृष्टिकर्ता है। पर माँस और लहू के एक मनुष्य के रूप में अब उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ एक पद और स्थान मिलता है, स्वर्गदूतों से बहुत ऊपर। यह आदर का स्थान, जहाँ से वह राज्य करेगा, वह हमारे साथ बाँटता है, क्योंकि वह हमें अपने भाई-बहन कहता है।

स्वर्गदूतों के संसार को यहूदी दृष्टि से थोड़ा-बहुत समझने के लिए, उदाहरण के तौर पर आगे कुछ बाइबल के पाठ दिए जा रहे हैं, जिन्हें पढ़ना सहायक है। इब्रानी बाइबल, यानी पुराना नियम, इसके बारे में क्या कहता है? स्वर्ग की सेनाएँ सब स्वर्गदूतों का पूरा समूह हैं। वे परमेश्वर की सेवा में खड़ी हैं और उसकी इच्छा पूरी करती हैं। स्वर्गदूतों के संसार में अलग-अलग पदवियाँ, नाम, पद और सेवाएँ भी हैं। स्वर्गदूत यह चुन सकते हैं कि वे परमेश्वर की सेवा करें या उससे मुँह मोड़ लें। परमेश्वर ने बहुत पहले, बाबेल में भाषाओं की गड़बड़ी के बाद, जातियों को परमेश्वर के पुत्रों को सौंपा था, पर उन्होंने अपना काम पूरा नहीं किया, अपनी ही महिमा चाही और मनुष्यों की सहायता नहीं की:

व्यवस्थाविवरण 32:8-9 (उत्पत्ति 11:1-9); भजन संहिता 82:6-7; उत्पत्ति 6:1-3।

1 राजा 22:19-23; अय्यूब 1-2।

भजन संहिता 148:1-5; अय्यूब 38:4-7; यशायाह 14:12; नहेम्याह 9:6; दानिय्येल 4:13-23; 7:9-10; 8:16; 9:21; 10:13,21; 12:1; उत्पत्ति 1:26 (“हम” परमेश्वर के सिंहासन के सामने/चारों ओर की स्वर्गीय सभा है)।

यीशु की स्वर्गदूतों से इस रूप में तुलना न. नि. में अनोखी है और हम पूछते हैं कि इतने विस्तार से यह क्यों आवश्यक है। हमें तो यह बिलकुल स्वाभाविक लगता है कि यीशु स्वर्गदूतों से बड़ा या ऊँचा है। पर यहाँ हमें यहूदी पाठकों की जगह खड़े होकर सोचने का प्रयास करना होगा। उनके लिए मसीहा यीशु किसी तरह एक नई बात भी था, जिसे उनके आसपास, जहाँ यीशु को पूरी तरह अस्वीकार किया जाता था, लगातार चुनौती मिलती थी। उनके संसार को देखने के ढंग को संबोधित किया जाता है और इस तरह बाइबल की वास्तविकता को गंभीरता से लिया जाता है। यह आज और हर जगह वह अदृश्य वास्तविकता है, जो हमें भी घेरे हुए है।

परमेश्वर सर्वोच्च शासक है, पर उसने बाबेल के गुम्मट के बाद स्वर्गदूतों को, जो परमेश्वर के पुत्र कहलाते हैं, जातियों पर ठहराया, ताकि वे उनकी अगुवाई करें और उन्हें न्याय और धार्मिकता की शिक्षा दें। पर इन्होंने अपना काम ठीक से पूरा नहीं किया और उसका अपने लाभ और अपनी पूजा के लिए दुरुपयोग किया (भजन संहिता 82)। इसलिए कहा गया है कि आने वाला संसार, यानी वह पृथ्वी जो नई की जाएगी, अब स्वर्गदूतों के अधीन नहीं की जाएगी। वे असफल हुए और परमेश्वर ने मसीहा-राजा यीशु को राज्य करने के लिए ठहराया। हम छुड़ाए हुए मनुष्यों को अपने साथ लेकर।

परमेश्वर के सबसे बड़े और सबसे शक्तिशाली पुत्रों में से एक शैतान है। वह परमप्रधान के विरुद्ध विद्रोह करके अपने ऊँचे पद से गिर गया। वह मनुष्यों का शत्रु और हत्यारा बन गया, पर मसीहा और उसकी मृत्यु के द्वारा हरा दिया गया (2:14)।

पहले दो अध्याय दिखाते हैं कि हम मरणशील मनुष्य और पापी मसीहा की मृत्यु के द्वारा कैसे छुड़ाए जाते हैं और अब साथी, यानी मसीहा के मित्र बन जाते हैं। हम उसका परिवार बन गए हैं। उसके साथ हम भविष्य में राज्य करेंगे। दूसरे शब्दों में: मसीह केवल स्वर्गदूतों से बड़ा और अधिक महिमामय ही नहीं है। मसीहा-राजा के साथ एक होकर हम भी स्वर्गदूतों से ऊपर रखे जाते हैं और उनका विशेष स्थान ले लेते हैं या उससे भी आगे बढ़ जाते हैं। पौलुस कहता है कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे। इसने इन यहूदियों के संसार को देखने के ढंग को उलट-पुलट कर दिया होगा। इसलिए यीशु का अंगीकार करने वाला होना सार्थक था। जातियों में से आए मसीहियों के लिए भी यही विशेषाधिकार है।

महायाजक

महायाजक लेवीय बलिदान-उपासना का मुख्य पात्र है। हारून, मूसा का भाई, पहला महायाजक था और उसके पुत्र और उनके पुत्र उसके बाद आए। मसीह को इब्रानियों की पत्री में सच्चे, बड़े और अनन्त महायाजक के रूप में समझाया गया है। महायाजक परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करता है और आराधना की अगुवाई करता है। वह विशेष वस्त्र और एक ध्यान खींचने वाली चपरास पहनता था, जिसमें 12 कीमती पत्थर जड़े थे। वे उन 12 गोत्रों को दर्शाते थे, जिनसे इस्राएल की जाति बनी थी।



पत्री के बिलकुल आरंभ में ही यीशु के उस महान कार्य की ओर संकेत किया जाता है, जो उसे ठीक ही इस अनोखे याजक का पद देता है: **उसने पापों की शुद्धि की** (1:3)। पाप, अपराध और उपासना-संबंधी अशुद्धता इस्राएल की जाति में एक समस्या थी, जिसका कोई हल होना ही था। यही बात पूरी मानवजाति पर भी लागू होती है, क्योंकि पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है और उसके साथ सहभागिता को असंभव बना देता है। पापों की यह शुद्धि पत्री में आगे गहराई से समझाई और प्रमाणित की जाती है, सुसमाचार के महिमामय संदेश के भाग के रूप में।

कहा गया है कि प्रभु यीशु मसीह का यह कार्य हमारे लिए छुटकारा और उद्धार है (2:3,10; 5:9; 7:25; 9:28)। और दासत्व से छुटकारा (2:15), आने वाली महिमा की ओर (2:10)। **उद्धार मन्दिर की किसी बलिदान-सेवा की भक्ति और पवित्र समारोह में नहीं मिला, बल्कि एक भयानक, क्रूर और**

लहूलुहान क्रूस की मृत्यु के द्वारा, जिसे उसने हमारे लिए सहा। यरूशलेम के फाटकों के बाहर (2:9; 13:12)। यीशु मसीह के इस उद्धार के कार्य के फल का वर्णन अलग-अलग शब्दों से किया गया है:

अनन्त छुटकारा (मुक्ति, 9:12,15 में), **क्षमा** (9:22; 10:18), पाप का **अन्त / मिटाया जाना** (हटाया जाना 9:26), **प्रायश्चित्त** (प्रायश्चित्त करना, 2:17), **पवित्रीकरण** (पवित्र बनाना, पवित्र करना, 2:11; 10:10,14,29; 13:12), **शुद्ध करना** (1:3; 9:14,22; 10:2, तुलना करें 10:22)।

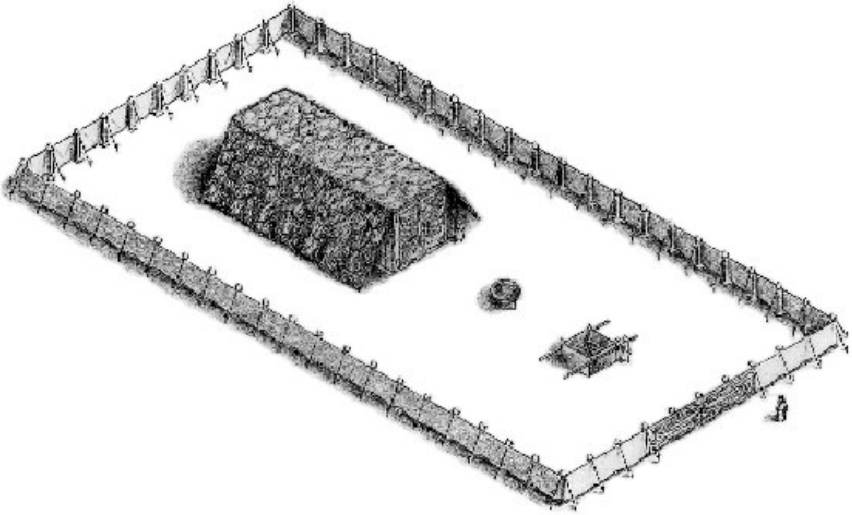
मसीह केवल महायाजक ही नहीं, बल्कि स्वयं बलिदान भी है। दोनों रूपों में वह पहली या पुरानी बलिदान- और वाचा-व्यवस्था का अन्त करता है। वह अंतिम महायाजक है, क्योंकि वह सदा जीवित है और उसका बलिदान एक ही बार का है और इतना सिद्ध है कि वह पाप का अन्त करता और उसे दूर कर देता है।

महायाजक के रूप में उसने न केवल पाप की समस्या का हल किया, बल्कि अब वह हमारी दिनचर्या की कठिनाइयों में भी हमारे लिए खड़ा होता है। और वह हमें एक आराधना में ले चलता है, जो अब स्वर्गीय है, जहाँ हम परमेश्वर के नए लोग होकर विश्वास में परमेश्वर के पास आते हैं, धन्यवाद, स्तुति और आराधना के आत्मिक बलिदानों के साथ।

सीनै, चलता-फिरता मन्दिर, जंगल की यात्रा

सीनै के पास वह जाति पूरे एक वर्ष तक डेरा डाले रही, जो मिस्र देश से छुड़ाई गई थी और तथाकथित निर्गमन (Exodus) के द्वारा बाहर निकली थी। यहाँ परमेश्वर ने अपनी प्रजा को अपनी राजकीय याजकों की जाति होने की विशेष पहचान दी। यहाँ उसने उन्हें अपनी व्यवस्था दी और यहाँ उसने उन्हें अपनी वाचा दी (जैसे निर्गमन 19 और 20)।

चलता-फिरता मन्दिर, जिसे मिलापवाला तम्बू भी कहते हैं, एक तम्बू-पवित्रस्थान था। वह एक आँगन से घिरा हुआ या उसमें लिपटा हुआ था। बीच के तम्बू में पवित्रस्थान और परमपवित्र स्थान थे, जिसमें वाचा का सन्दूक रखा था। यह एक पवित्र स्थान था, जहाँ परमेश्वर अपनी उपस्थिति के बादल में वास करता था। वह ब्रह्माण्ड के राजा और अपनी प्रजा के राजा के रूप में वाचा के सन्दूक पर विराजमान था, जो उसका सिंहासन कहलाता है।



तम्बू के सामने बड़ी वेदी और बड़ी हौदी थी। यहीं इस्राएल की उपासना की बलिदान-सेवा होती थी। बाद में, जब यरूशलेम में सुलैमान के द्वारा मन्दिर बनाया जाता है, तो व्यवस्था वही रहती है, बस बड़ी।

इब्रानियों की पत्री इसी तम्बू-पवित्रस्थान की बात करती है। वह परमेश्वर के बहुत सटीक और ठोस निर्देशों के अनुसार बनाया गया था। सारी सामग्री लोगों ने दान में दी थी और बहुत से निपुण कारीगरों ने उस पर काम किया था।

मलिकिसिदक

इस्राएल के मूल पिता, कुलपिता अब्राहम के इतिहास में मानो कहीं से अचानक एक व्यक्ति प्रकट होता है, जिसका नाम मलिकिसिदक है (उत्पत्ति 14)। वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक था, इस्राएल के मूसा वाले या लेवीय याजकपद से बहुत पहले। वह साथ ही शालेम का, यानी यरूशलेम का राजा भी था, उसके दाऊद का नगर बनने से पहले। इस व्यक्ति के बारे में हम इससे अधिक कुछ नहीं जानते। ठीक इसी बात का पत्री का लेखक लाभ उठाता है, क्योंकि इसमें वह 110वें भजन का अनुसरण करता है, जो कहता है: **तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है।** यह अति प्राचीन राजा-याजक यीशु का परम पूर्व-चित्र बन जाता है। वह याजक नहीं हो सकता था, क्योंकि वह यहूदा के राजकीय गोत्र से था, न कि लेवी के गोत्र से या हारून के परिवार से। इसलिए परमेश्वर यह नई याजकीय रीति ठहराता है, जो सदा बनी रहती है और पिछली रीति का स्थान लेती है। इस तरह यीशु, परमेश्वर का पुत्र, मसीहा, सदा के लिए सच्चा राजा-याजक होगा। केवल इस्राएल के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए। उसकी याजकीय सेवा पूर्णता तक पहुँचा चुकी है।

नई वाचा

परमेश्वर ने अपनी प्रजा के साथ, जिसे उसने मिस्र से छुड़ाया था, सीनै पहाड़ पर एक वाचा बाँधी। इस वाचा से परमेश्वर ने अपने आप को अपनी प्रजा से जोड़ लिया, कह सकते हैं, उससे विवाह कर लिया। इस वाचा के दायित्व थे, जो 10 आज्ञाओं में और दूसरी आज्ञाओं में प्रकट हुए। इन आज्ञाओं को मानना वाचा की शर्त थी। पर वाचा में प्रवेश करने के थोड़े ही समय बाद उन्होंने पहली आज्ञा तोड़ी और अपने लिए एक मूर्ति बनाई, सोने का बछड़ा। यह घटना इस सच्चाई का प्रतीक है कि न इस्राएल और न ही कोई भी मनुष्य इन सब आज्ञाओं को सदा मानने में समर्थ है। **इसलिए, क्योंकि परमेश्वर जैसा है वैसा है, उसने एक नई वाचा की प्रतिज्ञा की, जो अब इस पर निर्भर नहीं है कि हम क्या हैं, क्या करते हैं या क्या कर सकते हैं।**

नई वाचा, जिसका मध्यस्थ यीशु, परमेश्वर का पुत्र है, पुरानी वाचा से कुछ बातों में मिलती है। पर मुख्य अन्तर यह है कि इसके पूरे होने की शर्त इस्राएल के द्वारा व्यवस्था का पालन नहीं है, बल्कि परमेश्वर इसका पूरा होना केवल अपने आप से और अपनी प्रतिज्ञाओं से जोड़ता है। नई वाचा बिना शर्त की है, क्योंकि वह केवल परमेश्वर की प्रतिज्ञा और वचन में, यीशु मसीह के कार्य के द्वारा, टिकी हुई है। व्यवस्था अब मनुष्य के सामने इसलिए नहीं रखी जाती कि वह उसे अपनी शक्ति से पूरा करे, बल्कि व्यवस्था अब हृदय पर लिखी जाती है और परमेश्वर के आत्मा की शक्ति से उसकी प्रजा में पूरी होती है। नई वाचा में पाप की समस्या क्षमा के द्वारा एक ही बार में सदा के लिए हल हो जाती है (अध्याय 8-10)।

हम भी, जातियाँ, उन इस्राएलियों के साथ, जिन्हें यह पत्री लिखी गई है, इस वाचा में रखे गए हैं और आशीषित हुए हैं। इसे हम प्रभु भोज में, जिसे प्रभु की मेज़ भी कहते हैं, नियमित रूप से स्मरण करते हैं। इन यहूदियों के लिए नई वाचा को छोड़कर या ठुकराकर पुरानी वाचा में लौट जाना एक बहुत बड़ी हानि और पीछे हटना होता।

पुराने इस्राएली मन्दिर-उपासना में बलिदान

क्या पत्री पाने वालों को यीशु की क्रूस की मृत्यु से ठोकर लगती थी? क्या उन्हें क्रूस का अर्थ समझ में नहीं आता था और क्या उन्हें शायद वह शुद्ध करने वाला और छुटकारा देने वाला तर्क याद आता था, जिसे वे अपनी बलिदान-उपासना से जानते थे?

सुसमाचार का संदेश यह था: **यीशु का पृथ्वी का जीवन, उसकी लहूलुहान क्रूस की मृत्यु, मरे हुओं में से उसका जिलाया जाना और उसके बाद परमेश्वर के दाहिने हाथ उसका ऊँचा किया जाना, इन सबका व्यापक उद्धार देने वाला प्रभाव और अर्थ है।** उसका प्रतिरूप और पूर्व-चित्र पुराने इस्राएल की बलिदान-उपासना है। मसीह की मृत्यु को आमने-सामने की तुलनाओं में समझाया गया है।

इसलिए इब्रानियों की पत्री का नया और बेहतर संसार इस्राएल के इतिहास और उपासना की परम्पराओं का एक रचनात्मक संगम भी है और उनका विरोधी चित्र भी। हम 21वीं शताब्दी के लोगों के लिए यह सब बहुत दूर है और हमारी संस्कृति के लिए पराया है। पर पहली शताब्दी के यहूदी मसीहियों के लिए यह एक जाना-पहचाना और बड़ा विषय था, जिस पर उनके लिए बहुत कुछ निर्भर था। पाप को, ठीक वैसे ही जैसे तब उपासना-संबंधी अशुद्धता को, सदा दूर करना पड़ता था, ताकि संबंध फिर से स्थापित हो और भले रूप में अनुभव किया जा सके।

इसके लिए पशु-बलि थी, जो किसी भूल या अपराध की स्थिति में चढ़ानी पड़ती थी। या तो एक व्यक्ति के लिए या पूरी जाति के लिए। फिर भी, और इसे समझना बहुत महत्वपूर्ण है: जो जान-बूझकर या इरादे से पाप करता था, जैसे मूर्तिपूजा, व्यभिचार, हत्या, बच्चों की बलि, वह किसी बलिदान से शुद्ध नहीं हो सकता था। ऐसे अपराध थे, जिनके लिए पाप-शुद्धि का कोई बलिदान नहीं था। ऐसे जान-बूझकर किए गए पापों का परिणाम मृत्युदण्ड था। यह मूल सीमा नई वाचा में अब नहीं है।

पशु-बलि के लहू की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका थी। प्राण, यानी जीवन, लहू में है और प्रायश्चित्त करता है। इस्राएलियों के लिए लहू जीवन का प्रतीक था। **बहाए गए लहू की यही जीवन देने वाली शक्ति थी – पशु की मृत्यु नहीं –, जो परिवर्तन लाती थी (तुलना करें लैव्यव्यवस्था 17:11)। निष्कलंक पशु का जीवन उस शक्ति को दर्शाता था, जो पापी के दोषपूर्ण जीवन को फिर से ठीक कर सके।** पशु की मृत्यु के बिना प्रायश्चित्त के लिए लहू नहीं होता था।

प्रायश्चित्त (इब्रानी शब्द) का शाब्दिक अर्थ है "ढाँपना"। सचमुच पाप बलिदान के (सिद्ध/शुद्ध) जीवन के द्वारा ढाँप दिया जाता है। जब अलग करने वाला अपराध ढाँप दिया गया, तो बाधा हट जाती है और दोनों पक्षों के बीच संबंधों के नए होने का मार्ग खुल जाता है।

कुछ बलिदान पूरे या आंशिक रूप से वेदी पर जलाए जाते थे। **जलाए जाने के द्वारा पशु-बलि परमेश्वर के अदृश्य, आत्मिक संसार में पहुँच जाती थी, जिसके लिए बलिदान चढ़ाए जाते थे। आग कभी-कभी पाप पर परमेश्वर के क्रोध को दर्शाती है। पर बलिदान-उपासना में कभी क्रोध की बात नहीं होती, बल्कि प्रायश्चित्त की, यानी पापों के ढाँपे जाने और शुद्ध किए जाने की।** किसी बलिदान का लहू चढ़ाने वाले या चढ़ाने वालों को पाप से शुद्ध करता था। यह पापों और अपराधों के प्रायश्चित्त या उनसे शुद्धि के अनुरूप है। ये प्रतिनिधि रूप से दण्ड भरने वाले या हर्जाना चुकाने वाले बलिदान (संतुष्टि-बलिदान) नहीं हैं। बलिदान इसलिए नहीं चढ़ाए जाते थे कि परमेश्वर को इनकी आवश्यकता है। मनुष्यों को इन बलिदानों की आवश्यकता थी, ताकि वे अपने अपराध और उपासना-संबंधी अशुद्धता से छूट सकें या शुद्ध हो सकें।

इब्रानियों की पत्री दिखाती है कि पशु-बलि दुःख की बात है कि केवल पापों की याद दिलाती थी। कोई सिद्ध, अंतिम रूप से प्रभावी शुद्धि नहीं हो सकती थी। ये बहुत से बलिदान बिना कहे एक अंतिम बलिदान की ओर संकेत करते थे, जो पर पूरी तरह अपेक्षा से भिन्न रूप में सामने आया और पूरा हुआ।

ठीक इब्रानियों की पत्री दिखाती है कि परमेश्वर यीशु की हिंसक मृत्यु (अंग्रेज़ी victim) को कैसे स्वीकार करता है और उसे उसके पूर्ण और स्वेच्छा से किए गए आत्म-समर्पण (अंग्रेज़ी sacrifice) के रूप में पवित्र ठहराता है। मरते हुए और मरे हुए मसीहा का लहू, उसके जीवन और शरीर का समर्पण, परमेश्वर की उद्धार की इच्छा और उद्धार के कार्य का शिखर है। स्वयं परमेश्वर ही अपना पुत्र हमें देता है। परमेश्वर के लिए यह हमारी पाप की समस्या का अंतिम और सिद्ध हल है।

हम 21वीं शताब्दी के मनुष्य उद्धार के इस तर्क के बारे में जो कुछ भी सोचें – मनुष्यों और सारे ब्रह्माण्ड के लिए पाप की समस्या का यही एकमात्र हल है। हमारे पाप भी 2000 वर्ष पहले बहाए गए यीशु के लहू के द्वारा क्षमा किए जाते, ढाँपे जाते और दूर किए जाते हैं।

यह उसका पापरहित और पवित्र, उसका समर्पित जीवन है, जिसका ऐसा मूल्य है कि पतरस यीशु के बहुमूल्य लहू की बात करता है और ठीक यही अर्थ रखता है: यह लहू सब पापों का प्रायश्चित्त कर सकता और उन्हें सदा के लिए दूर कर सकता है।

एक पापबलि और दोषबलि (पंडुक, भेड़, बकरी, भेड़-बकरियों में से मेढ़ा या गाय-बैल/साँड़) एक मनुष्य अपनी सम्पत्ति में से लाता था और चढ़ाता था। परमेश्वर के लिए चढ़ाया गया, ताकि मनुष्य पाप से शुद्ध हो। पर अंततः चढ़ाया गया पशु परमेश्वर का ही दान था। परमेश्वर सब दानों का देने वाला है, इसलिए अपराधी के लिए बलिदान का भी और इस तरह उद्धार का भी।

अध्याय 9 और 10 का मुख्य विषय यीशु का बलिदान है। स्पष्ट हो जाता है कि यीशु की मृत्यु के बाद पीछे मुड़कर देखने पर पुरानी बलिदान-व्यवस्था पूर्णता तक नहीं ले जा सकती थी। वह उस पवित्र स्थान को ध्यान में रखते हुए, जहाँ परमेश्वर वास करता था, पापों और उपासना-संबंधी अशुद्धता की लगातार याद दिलाती थी। पर यीशु का लहू – वह उसके पापरहित, पवित्र और सिद्ध जीवन को दर्शाता है – हमें पूरी तरह और सदा के लिए शुद्ध और पवित्र करता है। चाहे उसकी मृत्यु मन्दिर के किसी पवित्र बलिदान-समारोह से ज़रा भी मेल न खाती हो। **परमेश्वर के लिए उसके पुत्र का मृत्यु तक स्वेच्छा से किया गया आत्म-समर्पण ही सिद्ध बलिदान है।**

भजनकार और भविष्यद्वक्ता कहते हैं कि परमेश्वर वास्तव में पशु-बलि चाहता ही नहीं था। मनुष्य-बलि तो कभी भी नहीं। परमेश्वर के पुत्र का मनुष्य बनना, उसका पवित्र और परमेश्वर को समर्पित जीवन, उसकी स्वेच्छा से सही गई शहीद की मृत्यु, ये सब मिलकर वह सिद्ध बलिदान हैं, जो पाप का शब्द के सच्चे अर्थ में अन्त कर देता है।

और एक बार फिर: यह लहू उन पापों से भी शुद्ध करता है, जो जान-बूझकर, इरादे से और उठे हुए हाथ से किए गए। पुरानी वाचा से यही सबसे बड़ा अन्तर है। यह अन्तर मूलभूत है और मुक्त करने वाला है, क्योंकि कोई भी अक्षम्य पाप बचा नहीं रहता।

यदि यह सब इस्राएल के लिए है, तो इसका हम जातियों से क्या लेना-देना है? बहुत कुछ, क्योंकि जो कुछ मसीहा ने पूरा किया, जो कुछ पुरानी बलिदान-उपासना में उसकी ओर संकेत करता था, वह हम गैर-यहूदियों पर भी लागू होता है। पहली शताब्दी के इन यहूदी मसीहियों से जो कुछ कहा गया है, वह बिना किसी सीमा के हम पर भी लागू होता है। हम उनकी तरह यहूदी मसीहा पर विश्वास करते हैं। ठीक इसी कारण हमारे लिए भी यह महत्वपूर्ण है कि हम इस विशेष पत्री को रुचि से पढ़ें और उसे गंभीरता से लें। चाहे कुछ स्थानों पर उसे समझना कठिन हो।

मेल-मिलाप या प्रायश्चित्त का महान दिन

इस्राएल के सब पर्वों और पर्व-कालों में से एक ऐसा है, जो बाकी सब से अलग है। इब्रानियों की पत्री विशेषकर अध्याय 9 और 10 में इसी की बात करती है। यह योम किप्पुर (JOM KIPPUR) है, सबसे बड़ा पर्व, जो आज भी इस्राएल के धर्मनिरपेक्ष राज्य में मनाया जाता है। पर बिना मन्दिर और बिना बलिदान के।

योम हाकिप्पुरीम (JOM HAKIPPURIM), जैसा इसका वास्तविक नाम है, सबसे बड़ा यहूदी पर्व है, पूरे वर्ष का सबसे पवित्र दिन; जर्मन में इसे "मेल-मिलाप का दिन" (Tag der Versöhnung) कहा जाता है। किप्पुर शब्द इब्रानी मूल "क-प-र" (K-P-R) से आता है और इसका अर्थ जटिल है। इसका अनुवाद ऐसे किया जा सकता है: **लीपना, ढाँपना, प्रायश्चित्त करना, पाप से शुद्ध करना, पाप दूर करना और टालना**। यही मूल कप्पोरेत (KAPPORETH) शब्द में भी मिलता है, जो वाचा के सन्दूक के ढकने का नाम है। यह प्रायश्चित्त का स्थान है। इस सोने की ढकने वाली पट्टी पर और उसके सामने लहू छिड़का जाता था। परमेश्वर बादल में इस वाचा के सन्दूक पर विराजमान था और इस बलिदान को स्वीकार करता था।

इस दिन क्या होता था? यह याजक-परिवार और पूरी जाति के लिए पवित्रस्थान में और उसके पास के जीवन की वार्षिक "नई शुरुआत" थी, "reset" था। बात उपासना-संबंधी अशुद्धताओं से शुद्ध करने की थी, जो परमेश्वर के निवास के पवित्र स्थान को दूषित करती थीं। इस्राएल का परमेश्वर और राजा वह पवित्र जन है, जिसके सिंहासन और निवास-स्थान को तम्बू-पवित्रस्थान में (या बाद में मन्दिर में) हर अशुद्धता से बचाना या शुद्ध करना पड़ता था। ये अशुद्धताएँ जान-बूझकर किए गए पाप नहीं थीं, बल्कि उपासना-संबंधी, अक्सर अनजाने में हुए स्पर्श थे।

जैसा यह शब्द कहता है, इस दिन बलिदान के लहू के द्वारा पाप ढाँप दिया जाता है, याजकों और पूरी जाति के लिए प्रायश्चित्त किया जाता है और एक नई शुरुआत संभव होती है।

यह "पाप-शुद्धि" पश्चाताप के साथ, मन फिराने और पापों को मान लेने के साथ होती थी। भीतरी भागीदारी और सहभागिता के बिना केवल बलिदान की विधि परमेश्वर का पाप की समस्या का हल नहीं थी।

इसमें बाकी बलिदान-सेवा से दो विशेष बातें हैं।

पहली यह है कि महायाजक वर्ष में केवल इसी एक बार (इस विधि में दो बार) सबसे भीतरी पवित्रस्थान में जाता था, वहाँ, जहाँ वाचा का सन्दूक रखा था। वहाँ वह बलिदानों का लहू वाचा के सन्दूक के सामने और उस पर, प्रायश्चित्त के ढकने पर छिड़कता था (रोमियों 3:25)।

जाति के लिए बलिदान में दो बकरे होते थे। एक परमेश्वर के लिए था। उसका लहू सबसे भीतरी पवित्रस्थान में ले जाया जाता था। दूसरा बकरा जीवित जंगल में ले जाया जाता था। पर तभी, जब उस पर हाथ रखकर जाति के पाप मान लिए और बोले जाते थे, और इस तरह वे प्रतीक रूप में पशु पर चले जाते थे। पशु को जंगल में ले जाया जाता था, मृत्यु के स्थान में, वहाँ, जहाँ पाप का स्थान है। इस तरह जाति के पाप मिटा दिए जाते और दूर कर दिए जाते थे। इस तरह जाति को, जिसने इस विधि से पहले उपवास किया था, एक प्रकार की पाप-मुक्ति दी जाती थी, जब वह अपने पाप मान चुकी होती और बलिदान चढ़ा दिए गए होते। पर यह केवल एक वर्ष के लिए होता था। यह विधि हर वर्ष दोहराई जाती थी। यहीं इब्रानियों का लेखक बात उठाता है और घोषणा कर सकता है कि मसीह के द्वारा एक ही बार में सदा के लिए प्रायश्चित्त हो चुका है, जिसे फिर कभी दोहराना नहीं पड़ेगा।

मसीह ने जो कुछ किया, उसमें कुछ भी केवल प्रतीक या चित्र या वास्तविकता की छाया मात्र नहीं है। यह सब वास्तविकता है, मान्य है और सदा बना रहता है। मसीहा यीशु के साथ परम ईश्वरीय वास्तविकता इस सच्चे मनुष्य के जीवन और मृत्यु में प्रकट हुई है। इसलिए पूरी पत्री को यीशु के वे शब्द शीर्षक के रूप में दिए जा सकते हैं, जो उसने क्रूस पर कहे: पूरा हुआ!

विश्वास

एक पूरा अध्याय विश्वास और भरोसे को समर्पित है। केवल सिद्धांतों में नहीं, बल्कि इन यहूदी मसीहियों के प्राचीन पूर्वजों के जीवन में। इस्राएल के अगुवे विश्वास के नायक हैं, जिन्हें उनका आदर्श होना है। अंततः स्वयं मसीहा ही सबसे बड़ा और साथ ही जीवन के सबसे निकट का आदर्श है। स्वयं मसीहा भी परीक्षा, प्रलोभन और विश्वास के बिना नहीं रहा।

किसी दिखाई देने वाले पवित्रस्थान के बिना, किसी दिखाई देने वाले नगर के बिना और एक यहूदी की अपनी जाति के साथ पहचान के बिना जीना एक बड़ी चुनौती है। क्योंकि अब जो कुछ यीशु के अनुयायी के लिए दिखाई देता है, वह भविष्य में है। अब कुछ भी दिखाई देने वाला और छूने योग्य नहीं है। दिखाई देते हैं केवल विश्वासी भाई-बहन, विश्वासियों की सहभागिता।

विश्वास में धीरज से टिके रहना, कभी हार न मानना, आशा को थामे रहना, मसीह में मिले धन को बार-बार हृदय में और विश्वासी भाई-बहनों के साथ मिलकर अनुभव करना और आँखों के सामने रखना, ताकि इस तरह आत्मिक परिपक्वता में बढ़ते जाएँ, यही इब्रानियों की पत्री का संदेश है।

अध्याय 1

परमेश्वर ने पुत्र में बात की है – वह चुप नहीं है

हे इब्रानियो, पीछे मुड़कर देखो, याद करो! तुम्हारा इतिहास जीवित है। आरंभ से यहोवा-परमेश्वर ने बात की है। केवल एक बार नहीं। अनेक और प्रभावशाली रीतियों से। वह चुप नहीं रहा, बल्कि भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उसने अपने आप को ऐसे प्रकट किया कि कोई अनसुना न कर सके। अक्सर उसने उन्हें भेजा। वे उसके वचन पहुँचाते रहे। पर वह समय अब बीत चुका है। क्योंकि परमेश्वर, पुत्र, आया और संसार से बोला। हाँ, परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा बात की, जो पुत्र है। ऐसी रीति से, जैसी पहले कभी नहीं। वह भविष्यद्वक्ताओं का अंतिम वचन था, पर ईश्वरीय रूप से सिद्ध – और इसलिए निर्णायक – वचन। **केवल वही, अनन्त और देहधारी पुत्र, यह वचन हो सकता था। यह सबसे बड़ा और सब से बढ़कर संदेश था। हाँ, पुत्र स्वयं संदेश था। इस्राएल के लिए और सारे संसार के लिए।**

वह सचमुच पुत्र है, क्योंकि वह सब वस्तुओं का वारिस ठहराया गया है। सदा से सब कुछ उसी का था, पर मनुष्य के पुत्र के रूप में भी भविष्य में शीघ्र ही सब कुछ उसी का होगा। सब कुछ पुत्र के द्वारा रचा गया। इसके लिए परमेश्वर पिता ने उसे नियुक्त किया था। पुत्र जो है और जो करता है, उसमें वह परमेश्वर की महिमा का सिद्ध प्रतिबिम्ब और उसकी ज्योति है। परमेश्वर की यह अथाह महिमा मनुष्य यीशु की पृथ्वी की और देहधारी वास्तविकता और उपस्थिति में आई। पुत्र में, यीशु में, परमेश्वर की महिमा प्रकट होती और दिखाई देती है। दिखाई देने वाली, अनुभव की जा सकने वाली, छूई जा सकने वाली। जो अब तक भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर के बारे में केवल टुकड़ों में, धीरे-धीरे पहचाना जा सकता था, वह अब यीशु में पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। वह मुहर की छाप जैसा है, जो परमेश्वर के संदेश की पुष्टि करती है। **अनन्त परमेश्वर ठीक वही है, जो यीशु में आया है। जैसे हमने यीशु को जाना है, वैसा ही परमेश्वर सदा रहा है। और वैसा ही वह सदा रहेगा।**

जो कुछ पुत्र ने रचा है, वह उसी से जीवित भी है। मानो एक नाल से जुड़ा हो। सब कुछ केवल उसी के द्वारा अस्तित्व में है – उसके सामर्थी जीवन-वचन और सर्वसामर्थ्य के वचन के द्वारा। सब कुछ उसके हाथ में है। वह ब्रह्माण्ड को, स्थान और समय को संतुलन में थामे रहता है। सब कुछ वह महिमामय लक्ष्य तक पहुँचाएगा। इसी के लिए वह आया है।

पुत्र, यीशु मसीह, ने स्वयं हमारे पापों से उस अत्यंत आवश्यक शुद्धि के लिए अपना लहू दिया। **अपने पवित्र और अनोखे रूप से सिद्ध जीवन से कीमत चुकाई।** उसने **असंभव** को **संभव बनाया**। इस बारे में मैं आगे भी अक्सर बात करूँगा। क्योंकि यह इतना महत्वपूर्ण है। इसलिए उसने मनुष्य के पुत्र के रूप में

सबसे ऊँचा आदर का स्थान ग्रहण किया है। वह परमेश्वर के प्रताप के दाहिने हाथ है। स्वर्गीय संसार में उसके अनन्त सिंहासन पर।

यीशु और स्वर्गदूत

स्वर्गदूत सामर्थ्य और प्रभाव में मनुष्यों से बढ़कर हैं। पर अब **मनुष्य** यीशु उनसे बड़ा और अधिक सामर्थी हो गया है। उसे एक श्रेष्ठ नाम मिला है। यह नाम स्वयं उसके लिए है। पुत्र के लिए। इस नाम के साथ, जो प्रकट करता है कि वह क्या है, वह सब स्वर्गदूतों से ऊपर है। यीशु को कभी किसी सामर्थी स्वर्गदूत के बराबर मत ठहराओ।

पुत्र के बारे में भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की गवाही

मैं इसे भजनों और भविष्यद्वक्ताओं के वचनों में से सात उद्धरणों से दिखाता हूँ।

उसे परमेश्वर से एक श्रेष्ठ पद और नाम मिला है। क्योंकि क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से कहा, जैसा भजन संहिता 2 में मसीहा-राजा के बारे में लिखा है: "तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है"? नहीं! **उसका, पुत्र का, कोई आरंभ नहीं था और न वह रचा गया, बल्कि अनोखी रीति से संसार में लाया गया।** यहोवा के अथाह देहधारण और मनुष्य बनने के रूप में, कुँवारी मरियम से जन्म लेकर।

या 2 शमूएल 7 में, जहाँ दाऊद के वंशज के बारे में लिखा है: "मैं उसका पिता ठहरूँगा और वह मेरा पुत्र ठहरेगा"? दोनों वचन अपनी भविष्यद्वाणी की चौड़ाई और गहराई में दाऊद के पुत्र सुलैमान में नहीं, बल्कि केवल यीशु में पूरे होते हैं। ये वचन उसके मनुष्य बनने की ओर संकेत करते हैं। उसके पुनरुत्थान की ओर और ब्रह्माण्ड के राजा के रूप में उसके ऊँचे किए जाने की ओर भी! **परमेश्वर अपने अनोखे पुत्र यीशु को स्वर्गीय सिंहासन से फिर दृश्य संसार में, बसी हुई पृथ्वी पर, ले आएगा।** केवल सब मनुष्य ही इसे नहीं देखेंगे। सब स्वर्गदूत इस घटना पर अपना भय और अपनी प्रशंसा प्रकट करेंगे, उसके सामने झुकेंगे और उसे आदर और आराधना देंगे। ठीक ऐसा ही उसके पहले आगमन पर भी हुआ था – जब परमेश्वर पुत्र मनुष्य बना।

स्वर्गदूतों के बारे में परमेश्वर भजन संहिता 104 में कहता है: "मैं स्वर्गदूतों को हवाएँ बनाता हूँ और उन्हें भेजता हूँ। वे मेरे सेवक हैं, जिन्हें मैं आग की लपटें बनाता हूँ।" पर अपने पुत्र के बारे में वह कुछ बिलकुल भिन्न कहता है। वह स्वर्गदूतों की तरह रचा हुआ, ढाला जा सकने वाला और बदला जा सकने वाला नहीं है। क्योंकि उसका, पहलौठे का, कभी कोई आरंभ नहीं था। भजन संहिता 45 के शब्दों में पुत्र के बारे में लिखा है: "हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन दृढ़ है, और सब के ऊपर, बिना आरंभ और बिना अंत के, युगानुयुग। राजदण्ड, तेरे शासन की छड़ी, धार्मिकता है। तेरा राज्य धर्ममय है। क्योंकि यीशु ने परमेश्वर की धार्मिकता से सब से बढ़कर प्रेम किया और अधर्म से ऐसी घृणा की, जैसी किसी और ने नहीं की। **इसलिए परमेश्वर ने आनंद और जयजयकार के तेल से उसका अभिषेक किया है। उसने उसे राजा होने के लिए बुलाया,**

और किसी को नहीं। किसी स्वर्गदूत को भी नहीं। वही अभिषिक्त है, मसीहा, मसीह।" और हम उसके साथी हैं, स्वर्गदूत नहीं!

पुत्र के बारे में परमेश्वर भजन संहिता 102 के शब्दों में कहता है: "तूने आरंभ में ब्रह्माण्ड को रचा, वह तेरे सामर्थी हाथों का काम है। पर वह नाश हो जाएगा, पर तू बना रहेगा। सब कुछ पुराना होकर सड़ जाता है, एक घिसे हुए लबादे की तरह, जिसे लपेटकर बदल दिया जाता है। ब्रह्माण्ड को रूपान्तरित किया और बदला जाएगा, ताकि वह बिखर न जाए। वह पुत्र के द्वारा नया हो जाएगा। **पर तू, पुत्र, तू वही है, कभी न बदलने वाला, जिसके वर्ष कभी समाप्त नहीं होते, और जिसे कभी नए किए जाने की आवश्यकता नहीं।**"

क्या परमेश्वर ने कभी किसी स्वर्गदूत से भजन संहिता 110 के ये शब्द कहे: "मेरे साथ सिंहासन पर बैठ, और निश्चित रह, वह दिन आएगा, जब तू अपने पाँव अपने सब शत्रुओं पर रखेगा, जैसे पाँवों की चौकी पर"? **उसे आदर का स्थान मिलता है। वह राज्य करेगा। स्वर्गदूत नहीं।**

स्वर्गदूत रचे हुए आत्मिक प्राणी हैं और रहेंगे। सेवा के लिए रचे गए। हाँ, वे इसलिए हैं कि उनकी सहायता करें और उनके साथ खड़े हों, जो पूरे और अंतिम उद्धार की बाट जोहते हैं। वे उनकी सहायता करते हैं, जो पुत्र के अनन्त राज्य की ओर कठिन मार्ग पर चल रहे हैं, जब वह पृथ्वी पर लाया जाएगा। परमेश्वर के अनन्त विश्राम की ओर। वहाँ वे अपने पूरे उद्धार के वारिस होते और उसे पाते हैं।

स्वर्गदूतों ने अक्सर विश्वासियों की सेवा की है और हर दिन करते हैं। जैसे उन्होंने यीशु की भी की।

अध्याय 2

पुत्र की बात पर पूरा ध्यान

क्योंकि हम इस बड़े उद्धार-लक्ष्य की ओर मार्ग पर हैं, इसलिए जो कुछ हमने सुसमाचार में सुना है, उस पर हमें और भी अधिक और ध्यान से मन लगाना चाहिए। नहीं तो हम एक जहाज़ की तरह सुरक्षित बन्दरगाह तक नहीं पहुँचेंगे। लक्ष्य के पास से बहकर निकल जाएँगे। विश्वास में जहाज़ के टूटने जैसा नाश उठाएँगे। विश्वास के मार्ग से भटक जाएँगे।

स्वर्गदूतों के द्वारा हमें, इब्रानियों को, सीनै पहाड़ पर मूसा की व्यवस्था सौंपी गई। वहाँ स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सभा उपस्थित थी। और व्यवस्था के वचन स्पष्ट थे: जो उन्हें पूरा करेगा, वह जीवित रहेगा। जो उन्हें पूरा नहीं करेगा, वह मरेगा। हमारे हर काम का उचित बदला मिलता है – उस व्यवस्था के आधार पर, जो स्वर्गदूतों के द्वारा हमें सौंपी गई। **पर यदि हम उस बड़े उद्धार को, उस छुटकारे को, जो पुत्र के द्वारा हमें दिया गया, लापरवाही से अनदेखा करें या दाँव पर लगा दें, हाँ तुच्छ जानें, तो फिर क्या?** तब हम परमेश्वर के धर्ममय न्याय से कैसे बच सकते हैं? तब हम कहाँ भाग सकते हैं?

यह उद्धार हमारे प्रभु यीशु के द्वारा आया और शुरू हुआ। उसने राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया। अपनी मृत्यु और अपने पुनरुत्थान के बाद उसने अपने चेलों को, जिन्होंने अपनी आँखों से देखा और अपने कानों से सुना था, यह काम सौंपा कि वे पूरे किए गए बड़े उद्धार का हर जगह प्रचार करें। उन्होंने हमें भी राज्य और उद्धार के उस शुभ संदेश की पुष्टि की, जिससे यीशु ने आरंभ किया था। आज तक परमेश्वर स्वयं इस संदेश की पुष्टि अलौकिक चिन्हों और आश्चर्यकर्मों से करता है। वह यह पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा करता है, पर असाधारण सामर्थ्य के कामों के द्वारा भी। जहाँ कहीं यह वचन सुनाया गया और विश्वास किया गया और किया जाता है, वहाँ परमेश्वर और उसके राज्य की शक्ति काम करती है। **ये घटनाएँ इसके सिवा कोई और निष्कर्ष नहीं छोड़तीं कि यह संदेश स्वयं परमेश्वर की ओर से आता है। पुत्र के इस वचन पर तुम्हें ध्यान देना है! वह अंतिम, पर साथ ही सबसे बड़ा भविष्यद्वक्ता था, क्योंकि वह पुत्र है।**

पुत्र और स्वर्गदूत

एक बार फिर स्वर्गदूतों के बारे में। परमेश्वर ने उस समय पृथ्वी को मनुष्य के अधिकार में रखा – स्वर्गदूतों के नहीं। आने वाला संसार भी उसने स्वर्गदूतों को नहीं सौंपा और न उन्हें मीरास में दिया। भजन संहिता 8 में लिखा है: “मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण करे, या मनुष्य का पुत्र क्या है कि तू उसकी सुधि ले? तूने उसे स्वर्गदूतों से – एलोहीम से, परमेश्वर के **रचे हुए** पुत्रों से – थोड़ा ही कम बनाया, पर महिमा और आदर का मुकुट उसके सिर पर रखा; तूने सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया।” यह आदम और उसके वंशजों के

लिए था। **पर वह और वे इस बुलाहट के योग्य नहीं ठहरे। इसके विपरीत यह बात पूरी तरह पुत्र पर लागू होती है, जो मनुष्य बना।** यदि परमेश्वर ने पुत्र को, मसीहा यीशु को, **सब कुछ** सौंप दिया और उसके अधीन कर दिया, तो कुछ भी नहीं बचता जो उसके अधीन न हो। तब स्वर्गदूत भी। सब का अर्थ है सब। अनोखा, अतुलनीय और अभिषिक्त मनुष्य यीशु, पुत्र, आने वाले संसार पर राज्य करेगा।

फिर भी हम **आज अभी नहीं** यीशु के इस विश्वव्यापी राज्य को उसके अकल्पनीय विस्तार में देख और अनुभव कर सकते। पर एक दिन वह समय आएगा। जब उसका समय आ जाएगा। पर जो हम **अभी** ही विश्वास में और हृदय की आँखों से पहचानते हैं, वह यह है: यीशु, जो अपने पृथ्वी के जीवन की निर्बलता और गरीबी में स्वर्गदूतों से नीचा था। जिसने सबके लिए और सब कुछ के लिए मृत्यु सही और एक हिंसक क्रूस की मृत्यु की सारी कड़वाहट चखी। हम सबके लिए। ताकि इस तरह परमेश्वर का अनुग्रह सारी सृष्टि के काम आए। और इसलिए, क्योंकि उसने असंभव को किया, स्वेच्छा से अपने आप को क्रूस पर चढ़ने दिया और मरा, अब वह परमेश्वर की महिमा और आदर से घिरा है, हाँ, महिमा के विजय-मुकुट से सुशोभित है।

पुत्र के द्वारा बड़ा उद्धार

यह पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार भी है – जिसके द्वारा और जिसके लिए सब वस्तुएँ रची गई – कि वह उसे, मसीहा यीशु को, पृथ्वी पर उसके दुःखों के द्वारा सिद्ध करे। हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए पूरी तरह योग्य बनाए, और अपने स्वर्गीय पद और हमारे लिए महायाजक की अपनी सेवा के लिए पूरी तरह योग्य बनाए, जिसके बारे में मैं आगे विस्तार से बात करूँगा। किसी स्वर्गदूत ने नहीं, बल्कि पुत्र ने बड़ा उद्धार, छुटकारा, रचा। किसी वचन से नहीं, बल्कि अपने जीवन के समर्पण से। **वह, यीशु, हमारे उद्धार का कर्ता है, अगुवा है, हाँ, कप्तान है। इस बलवन्त के रूप में वह हमें, बहुत से बेटों और बेटियों को, बिना रुके और विजयी होकर उस स्वर्गीय महिमा तक ले जाता है, जो पहले हमारे लिए बन्द थी।** ये **बहुत से** मनुष्य हैं, जिन्हें वह दासत्व से निकालकर स्वतंत्रता और परमेश्वर के विश्राम में ले जाता है।

पुत्र, हम और स्वर्गदूत

मसीह ने हमें पवित्र किया है और परमेश्वर के पास ले आया है। सब कुछ परमेश्वर से आता है, जिसने अपने पुत्र को पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में जन्म दिया। ठीक वैसे ही जैसे हमें भी, अपने बेटों और बेटियों को। **इसलिए मसीहा, मनुष्य के रूप में, स्वर्गदूतों के सामने – जो सामर्थी और अमर होकर मनुष्यों से बढ़कर हैं – हम मनुष्यों को अपने भाई-बहन कहने में लज्जित नहीं होता।** स्वर्गदूतों की, एलोहीम की, स्वर्गीय सभा में वह खुलकर अंगीकार करता है, जैसा भजन संहिता 22 कहता है: "हे परमेश्वर, मैं तेरा महिमामय नाम **अपने भाई-बहनों** को सुनाऊँगा; स्वर्गदूतों की स्वर्गीय सभा के बीच और छुड़ाए हुओं के बीच भी मैं तेरी स्तुति का गीत गाऊँगा।" एक दूसरे स्थान पर लिखा है: "मैं अपना भरोसा उस पर रखूँगा, उस परमेश्वर पर, जो यह नया परिवार चाहता था।" क्रूस पर लोगों ने ठट्ठा किया कि वह परमेश्वर पर भरोसा रखे, ताकि बचाया जाए: उसने अपने परमेश्वर पर ऐसा भरोसा रखा जैसा किसी और ने नहीं, उस परमेश्वर

पर, जिसने उसे उसके मारे जाने से नहीं बचाया। वह मरा। इस भयानक मृत्यु ने यह अद्भुत फल दिया, जैसा यशायाह 8 कहता है: "देख, मैं और वे बच्चे, जिन्हें परमेश्वर ने मुझे भाई-बहन के रूप में दिया है।" मसीहा हम सबको, अपने बड़े, हाँ अनगिनत मानवीय परिवार को, स्वर्गदूतों के संसार की स्वर्गीय सभा के सामने प्रस्तुत करता है। **हमारी उद्धार की आवश्यकता, हमारी निर्बलता और हमारी भौतिक नश्वरता के कारण हमसे लज्जित होने के बदले वह इसका उलटा करता है: वह घोषणा करता है और आनंद मनाता है कि वह सदा के लिए हमसे जुड़ा है।**

ऐसा लहू का नाता और ऐसा गहरा संबंध कैसे बन सका? यह कैसे संभव हुआ? वह, अनन्तकाल का पुत्र, पूरी तरह और सम्पूर्ण रूप से मनुष्य बना। उसने हमारे मानवीय और मरणशील अस्तित्व को पूरी तरह अपना लिया, ऐसे कि वह वही था जो हम हैं। पाप को छोड़कर। उससे उसका कोई लेना-देना नहीं था, जैसा उसने सिद्ध कर दिखाया। मरने में भी वह हमारे समान बना, पर पाप के कारण नहीं। उसकी आज्ञाकारिता और उसके समर्पण का अर्थ उसकी मृत्यु था।

मृत्यु, शैतान और मृत्यु का भय

हम मनुष्य दिन प्रतिदिन मृत्यु और मृत्यु के भय के अधीन हैं। पर वह शैतान को हराने आया, जिसके पास मृत्यु की शक्ति है। मृत्यु शैतान के खेल में उसका साथ देती है। उसे मृत्यु अच्छी लगती है, क्योंकि वह असहाय होकर उसके हाथ में पड़े मनुष्य को भय और आतंक में डाल देती है। पर पुत्र हमारी मृत्यु और हमारे भय की शक्ति को तोड़ने आया। उसने शैतान को उसी के हथियार से **हराया**, अर्थात् स्वयं मरकर। इस तरह वह उन सबको छुड़ा सका, जो जीवन भर विवेक की पीड़ा और मृत्यु के भय में उस व्यवस्था के अधीन थे, जिसे वे कभी पूरा नहीं कर सकते। **अब मृत्यु की अन्धकारमय शक्ति उन सबके लिए टूट चुकी है, जो हमारे उद्धार के अगुवे, यीशु मसीह, के पीछे चलते हैं। एक पवित्र, पापरहित मनुष्य को स्वेच्छा से मरना पड़ा और इस तरह मृत्यु की रात में घुसना, मृत्यु के राज्य को लूटना और उसे अपना राज्य बनाना पड़ा।** चाहे हम अभी भी मरते हैं, मृत्यु ने हमारे लिए अपना निराशाजनक, अन्धकारमय भयानक चेहरा खो दिया है; इसके विपरीत, उसे हमारी सेवा करनी पड़ती है, क्योंकि जब हम मरेंगे, तो वह हमें स्वर्गीय संसार में मसीह के पास ले जाएगी। हमारे उद्धार के कप्तान ने शैतान को हरा दिया है और उससे उसकी शक्ति और उसका हथियार छीन लिया है: उसमें पाप और मृत्यु से स्वतंत्रता है!

ऐसा महायाजक, जैसा पहले कभी नहीं था

उसे स्वर्गदूतों के उद्धार की चिंता नहीं थी। परमेश्वर का पुत्र कोई स्वर्गदूत तो नहीं है, बल्कि वह मनुष्य बना है। वह वंश की, अब्राहम के वंशजों की, चिंता करता है, हे इब्रानियो। बात तुम्हारी है और उन सब की भी, जो अब्राहम की तरह विश्वास करते हैं। क्योंकि अब्राहम में जातियों से भी आशीष की प्रतिज्ञा की गई थी। और जो कोई विश्वास करता है, वह अब्राहम की सन्तान है।

इसलिए मैं एक बार फिर कहता हूँ कि यीशु को सब बातों में – पाप को छोड़कर, निश्चय ही – अपने भाई-बहनों के समान बनना था। केवल इसी तरह वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए एक दयालु, सहानुभूति रखने वाला और विश्वासयोग्य महायाजक बन सका। उसने हमारे लिए क्या किया है? **उसने हमारे पापों का प्रायश्चित्त किया है और उन्हें दूर कर दिया है। उसने पापों की शुद्धि की है। ऐसा ही हर वर्ष – यीशु के पूर्व-चित्र के रूप में – यरूशलेम के मन्दिर में प्रायश्चित्त के महान दिन पर इस्राएल की जाति के लिए होता था। पर वह इसकी पूर्ति है। उसने हमारे पापों की अनुग्रह भरी क्षमा प्राप्त कराई है। सिद्ध रूप से, एक ही बार में सदा के लिए।**

वह केवल हमारी पाप की समस्या के लिए **महायाजक** नहीं बना। नहीं, वह हमारे लिए ऐसा बना रहता है, जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ। वह हमारे विश्वास के मार्ग पर हमारी सहायता करता है। वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए खड़ा होता है। वह हमारे लिए प्रार्थना करता है। क्योंकि हम निर्बल हैं, प्रलोभनों और सतावों से घिरे हैं, जो हमें मार्ग से हटाना और रोकना चाहते हैं। इन दुःखों, सतावों और संकटों को उसने स्वयं अनुभव किया और सहा है। जितनी तीव्रता से हम कभी अनुभव करेंगे, उससे कहीं अधिक। इसी ने, जैसा मैंने पहले कहा, उसे इस महायाजकीय सेवा के योग्य बनाया, ताकि वह सहानुभूति रख सके, सहायता कर सके और हमारे साथ खड़ा रह सके। यदि वह मनुष्य न बनता, यदि उसने वह अनुभव न किया होता और न सहा होता जो उसके साथ हुआ, तो वह कभी ऐसा महायाजक नहीं बन सकता था।

अध्याय 3

इसलिए, हे सब पवित्र लोगो, हे छुड़ाए हुए विश्वासी भाई-बहनो, यीशु की ओर देखो। उस पर, जो वह है और जो वह करता है। तुम्हारे लिए। उस पर ध्यान लगाओ। वह परमेश्वर के सामने हमारे लिए हमारा महायाजक है। और हमारा प्रेरित, जो परमेश्वर की ओर से आता है और हमसे बात करता है। हमारा अंगीकार, वह गवाही जो हमारे आसपास के लोग हममें देखते हैं, उसी पर टिकी है – वही उसकी विषय-वस्तु और उसका संदेश है। तुम सब सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर की बुलाहट के साझेदार और भागी हो। परमेश्वर की बुलाहट स्वर्ग से तुम्हारे पास आई। और वहीं वह तुम्हें बुलाता है – अपने स्वर्गीय पवित्रस्थान में।

यीशु और मूसा

यीशु उसके प्रति विश्वासयोग्य था और है, जिसने उसे इस सेवा और पद पर ठहराया – जैसे मूसा भी अपने सारे घराने इस्राएल में, परमेश्वर की पुरानी प्रजा में, विश्वासयोग्य था। पर यीशु का आदर मूसा से बड़ा है। ठीक वैसे ही जैसे घर बनाने वाले का आदर उस घर से बड़ा होता है, जिसे उसने बनाया। हर घर को निश्चय ही कोई न कोई बनाता है; **पर जिसने सब कुछ बनाया, वह स्वयं परमेश्वर है। यीशु परमेश्वर है, जिसने सब कुछ – मूसा और उसके घराने को भी – रचा है।**

मूसा इस घर में अपनी सेवा में विश्वासयोग्य था। यह उस बात का पूर्व-चित्र और गवाही था, जिसका तुम्हें प्रचार किया गया। और वह है मसीह, पुत्र। वह इस घर के **ऊपर** है। मूसा की तरह नहीं। वह इस घर के **भीतर** एक सेवक था। **वह घर, जिसे मसीह ने रचा है और जो उसका है, वह हम हैं: उसका परिवार, परमेश्वर की बेटियाँ और बेटे!**

पर सावधान रहो! तुम यह तभी हो और तभी बने रहते हो, जब तुम उस आनंद भरे भरोसे और उस आशा को, जिस पर हम इतना गर्व कर सकते हैं, **थामे रहो** – और साथ ही अपने जीवन के अन्त तक दृढ़ बने रहो। या मसीहा के महिमामय आगमन तक।

जंगल में कुड़कुड़ाना

पवित्र आत्मा भजन संहिता 95 में कहता है: “आज, यदि परमेश्वर का शब्द सुनाई दे, तो ध्यान से सुनो और जो वह कहता है, वही करो। अपने हृदय को कठोर करने के बदले। क्योंकि ऐसा ही हुआ था कड़वाहट के समय, परीक्षा के दिनों में, जंगल में। तब तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे परखा, मुझे चुनौती देकर और संदेह से जाँचकर, जबकि उन्होंने 40 वर्ष तक मेरी विश्वासयोग्यता और देखभाल देखी थी। इसलिए मैं उस पीढ़ी से क्रोधित था। मैंने कहा: ये सदा अपने मन में भटकते रहते हैं। उन्होंने मेरे भले मार्गों को कभी पहचाना ही नहीं

और पहचानना चाहा भी नहीं। तब मैंने अपने पवित्र क्रोध में शपथ खाई: यह पीढ़ी, जिसने मिस्र को छोड़ा, मेरे विश्राम में, प्रतिज्ञा किए हुए कनान देश में, प्रवेश नहीं करेगी।"

ठीक इसीलिए अपने आप पर ध्यान दो, कि किसी का ऐसा बुरा हृदय न हो। अविश्वास से भरा हृदय, जो जीवित परमेश्वर और मसीहा से फिर जाने को तैयार हो। इस परमेश्वर और उसकी भलाई को तुमने मसीहा यीशु के द्वारा जाना और अनुभव किया है। **इसलिए इस कठिन और परीक्षाओं से भरे समय में हर दिन एक दूसरे का साहस बढ़ाओ**। यह लगातार करते रहो, ताकि तुममें से कोई पाप के धोखे से अन्धा होकर अविश्वास में न बहक जाए और कठोर न हो जाए। **यह सोचना धोखा है कि विश्वास छोड़ देने से विश्राम मिलता है। याद करो: हम तो सदा के लिए उसके साथी, मसीहा यीशु के सच्चे भाई-बहनों जैसे बन गए हैं। क्या इससे बढ़कर कुछ हो सकता है? क्या इसलिए विश्वास में दृढ़ता से आगे बढ़ते रहना सार्थक नहीं है?** हम सब कुछ तभी सच्चा और वास्तविक अनुभव करते हैं, जब हम विश्वास के उस भरोसे को, जो आरंभ में हमारे पास था, फिर से थाम लेते हैं। और अन्त तक दृढ़ता से थामे रहते हैं। और विश्वास को नहीं छोड़ते। परमेश्वर के विश्राम की यात्रा में कोई छोटा रास्ता नहीं है।

परमेश्वर की चेतावनी यह है: "आज, हाँ सदा, यदि तुम मेरा शब्द सुनो, तो अपने हृदय कठोर न करो, जैसे उस समय कड़वाहट में किया था।" वह कौन था, जिसने तब अपना हृदय कठोर किया और परमेश्वर को उकसाया? क्या वे सब नहीं थे, जो मूसा के पीछे मिस्र से निकले थे? परमेश्वर किस पर क्रोधित था? 40 वर्ष तक? क्या उन सब पर नहीं, जिन्होंने पाप किया था और जिनकी लोथें जंगल में पड़ी रह गईं? किन इस्राएलियों से उसने शपथ खाई थी कि वे उसके विश्राम में प्रवेश नहीं करेंगे? ठीक उन्हीं से, जो आज्ञा न मानने वाले थे और जिन्होंने अपना हृदय उसके विरुद्ध कठोर कर लिया था। हम स्पष्ट देखते हैं कि वे अपने अविश्वास के कारण प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं कर सके।

अध्याय 4

परमेश्वर का विश्राम, तब, आज और आने वाले समय में

हे इब्रानियो, और इस पत्री के सब सुनने और पढ़ने वालो: आओ, हम गंभीरता से इस बात की चिंता करें कि परमेश्वर के उस विश्राम तक, जिसकी उसने हमसे प्रतिज्ञा की है, सचमुच पहुँचें! तुम्हें वहाँ के मार्ग में पीछे नहीं छूटना है। और सबसे बढ़कर: अन्त में लक्ष्य से चूकना नहीं है। हमें परमेश्वर के आने वाले विश्राम का शुभ संदेश सुनाया गया है। ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों को तब भेदियों के द्वारा धनी कनान देश का संदेश मिला था। पर कनान की उपज के बारे में संदेश से उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। क्योंकि उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया और भीतर जाने से डरते थे। **हम सब, जो मसीहा के संदेश पर विश्वास करते हैं, स्वर्गीय विश्राम में प्रवेश करेंगे।** पर तब बात बिलकुल अलग थी। वे उस विश्राम में प्रवेश नहीं कर पाए, जिसका वचन परमेश्वर ने उन्हें दिया था। क्योंकि वे बार-बार अपने हृदय कठोर करते रहे और परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया।

आरंभ से परमेश्वर दिखाता है कि अभी एक विश्राम बाकी है। जबकि उसकी सृष्टि के काम आरंभ में ही पूरे हो चुके थे। इसलिए उन्हें विश्वास करना चाहिए था। मूसा ने कहा: “और परमेश्वर ने सातवें दिन अपने सब कामों से विश्राम किया।” पर यहाँ लिखा है: “वे, वह पीढ़ी जो मिस्र से निकली, निश्चय ही मेरे विश्राम में प्रवेश नहीं करेगी।” पर हमसे विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा की गई है, यदि हम भरोसा रखें। पर उस समय शुभ संदेश सुनने वाले अपनी आज्ञा न मानने के कारण विश्राम तक नहीं पहुँचे। पर परमेश्वर ने अब फिर से, मिस्र से निर्गमन के बहुत समय बाद, अनुग्रह का एक नया दिन ठहराया है – एक नया “आज”। दाऊद के द्वारा वह भजन संहिता 95 में प्रतिज्ञा करता है, जैसा पहले भी उद्धृत किया गया: “आज, यदि तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने हृदय कठोर न करो।” क्योंकि यदि यहोशू, मूसा का उत्तराधिकारी और इस्राएल का अगुवा, उस पीढ़ी को अंतिम विश्राम में ले आया होता, तो वह अब किसी और विश्राम की बात न करता। इसलिए परमेश्वर की प्रजा के लिए अब भी एक आने वाला सब्त का विश्राम है। **न सृष्टि का सातवाँ दिन, सब्त का दिन, और न कनान देश परमेश्वर का अंतिम विश्राम लाए। केवल फिर आने वाले मसीहा यीशु के द्वारा, उसके बलिदान के द्वारा और उसके शासन के द्वारा परमेश्वर का अंतिम और अनन्त सब्त का विश्राम वास्तविकता बनेगा।** क्योंकि जो एक दिन इस सब्त के विश्राम में, परमेश्वर की इस शान्ति में प्रवेश कर चुका है, वह – स्वयं परमेश्वर की तरह – अपने कामों से विश्राम पा चुका है। जैसा आरंभ में दिखाई देता था।

इसलिए आओ, हम भरोसे के साथ उसके विश्राम में प्रवेश करने के लिए सब कुछ लगा दें। हममें से कोई भी, उन लोगों की तरह, वहाँ के मार्ग में गिर न पड़े। बात उन पापों की नहीं है, जो हम दुःख की बात है कि

हर दिन करते हैं। बात यह है कि तुम मसीह पर, मसीहा पर, विश्वास करो और उसे थामे रहो। उसे मत छोड़ो। वह तुम्हें थामे रहता है! अपने आप को थामे रहने दो।

परमेश्वर का जीवित और सहायक वचन

परमेश्वर हमें, हर एक को, परखता है कि हममें सच्चा विश्वास है या नहीं। वह अपने लिखे हुए वचन के द्वारा हमें परखता है। यह वचन जीवित है और इसलिए प्रभावशाली है। यह हमसे ऐसे बात करता है, मानो परमेश्वर स्वयं सीधे हमसे व्यक्तिगत रूप से बात कर रहा हो। साथ ही उसका वचन तेज़ है, हाँ, दोधारी तलवार की धार से भी तेज़। क्योंकि वह हमारे प्राण के सबसे भीतरी जीवन में घुस जाता है। वह हमारे सबसे गहरे विचारों और हमारे मनोभाव को परखता और खोलकर रख देता है। यह तलवार, चित्र की भाषा में कहें, प्राण और आत्मा को अलग कर सकती है, ठीक वैसे ही जैसे हड्डियों और गूदे को। **इस तरह हम अपने आप को कहीं बेहतर समझ और आँक सकते हैं। पर खतरों को पहचान भी सकते हैं और इस वचन की शक्ति से उन्हें नष्ट कर सकते हैं – या बस उनसे बचकर निकल सकते हैं।**

विशाल सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं, जिसे सृष्टिकर्ता नहीं देखता। कोई प्राणी, कोई एक भी मनुष्य, परमेश्वर से छिप या भाग नहीं सकता। सब उसके सामने मानो नंगे हैं। हम उसे धोखा नहीं दे सकते। वह सब कुछ देखता है। वह हर विचार और हर उद्देश्य को जानता है। सृष्टि होने के नाते हम उसके प्रति उत्तरदायी हैं और एक दिन हमें उसे लेखा देना होगा।

हमारा महायाजक हमें अनुग्रह के सिंहासन तक ले जाता है

ऐसा है परमेश्वर का स्वभाव और उसकी वास्तविकता। और यद्यपि इस कारण हम अब बहुत डर सकते थे, फिर भी हम निश्चिन्त होकर और साहस से आगे बढ़ सकते हैं। क्योंकि हमारा – इस्राएल की तरह – एक महायाजक है। पर पुरानी रीति का नहीं। हमारा महायाजक आकाशों से होकर ऊपर चढ़ गया है। हाँ, परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन तक! स्वर्गीय और अनन्त पवित्रस्थान में। उसने हमारे सब पापों का प्रायश्चित्त किया है। ठीक इसीलिए हम यीशु के बारे में अपने अंगीकार को थामे रहते हैं! हमारा महायाजक हमारी निर्बलताओं को, हमारे डर और हमारी चिंताओं को, हमारी थकान और शिथिलता को, पर संदेह और निराशा को भी समझ सकता है। वह हमारे साथ दुःख उठाता और महसूस करता है। वह यह ऐसे कर सकता है, जैसे कोई और नहीं। क्योंकि वह मनुष्य के रूप में अपने पूरे जीवन में सब बातों में परखा गया। क्रूस पर मृत्यु तक। उस पर संकट आए और उसकी परीक्षा ली गई। उसे यह प्रलोभन मिला कि वह क्रूस और भयानक पीड़ा को ठुकरा दे और क्रूस के बिना आसान मार्ग पकड़ ले। पर वह दृढ़ बना रहा। क्योंकि उसने कभी पाप और अविश्वास के आगे हार नहीं मानी। वह पापरहित रहा और उसने पाप नहीं किया! यही हमारा आदर्श है!

इसलिए आओ, हम साहस और भरोसे के साथ परमेश्वर के सामने आएँ। चाहे हम कहीं भी हों। आत्मिक वास्तविकता में सिंहासन हमसे एक कदम भी दूर नहीं है। परमेश्वर का पुत्र, जो हमें अपने भाई-बहन कहता है, सदा परमेश्वर के सिंहासन के पास **हमारे लिए** है। वह हमें निमंत्रण देता है कि हम निडर होकर **अनुग्रह**

के सिंहासन के पास आएँ। आओ, हम इस स्वर्गीय सिंहासन के सामने अपनी सब चिंताएँ, अपने डर, अपनी आशंकाएँ और संदेह फैला दें। धन्यवाद दें। आराधना करें। आओ, हम वहाँ अनुग्रह के सिंहासन के पास – विश्वास में और पवित्र आत्मा में – समय बिताएँ। विश्राम पाएँ – और उसकी शान्ति पाएँ। उसकी सुनें।

उसका सिंहासन न्याय और दोष लगाने का स्थान **नहीं** है। बल्कि अनुग्रह का। वहाँ हमारा स्वागत है। हमारी प्रतीक्षा की जाती है। वहाँ से हम दया और अनुग्रह पाते हैं। और वह भी ठीक तब, जब हमें उनकी आवश्यकता होती है। परमेश्वर हमारी विनती और गिड़गिड़ाहट का सदा उत्तर देगा। जैसा हमारे लिए भला है। पर अपने समय पर। सही समय पर! कभी देर से नहीं! हमारी सहायता परमेश्वर से आती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया।

अध्याय 5

हारून, मसीह और मलिकिसिदक

एक महायाजक मनुष्यों में से चुना जाता है, ताकि परमेश्वर के सामने मनुष्यों के लिए खड़ा हो। वह उनके लिए भेंटें और बलिदान वेदी पर लाता है। इस्राएल की जाति के पापों के लिए। वह स्वयं अनजानों और भटकने वालों पर, यानी उन पर जिन्होंने पाप किया है, नरमी रखता है और उन्हें समझता है। क्योंकि वह स्वयं भी तो एक मनुष्य है, जो भूल कर सकता है। ऐसा जन, जो बाकी सब की तरह पाप करता है। इसका अर्थ है: उसे अपने लिए भी बलिदान चढ़ाना पड़ता है।

यीशु के साथ यह बिलकुल अलग है: उसे मनुष्यों ने महायाजक नहीं ठहराया। उसे परमेश्वर ने इसके लिए बुलाया है। जैसे आरंभ में हारून को। मसीह के बारे में भजन संहिता 2 में लिखा है: "तू मेरा पुत्र है, आज मैंने तुझे उत्पन्न किया है।" भजन संहिता 110 में वह उसके बारे में कहता है: "तू सदा के लिए याजक है। **हारून के समान नहीं, बल्कि मलिकिसिदक के समान**।"

उसका पृथ्वी का जीवन कैसा था? किस बात ने उसे महायाजक होने के योग्य बनाया? उसके पास क्या था, जो हारून के पास नहीं था? उसका जीवन प्रार्थना से भरा था। उस एक से विनती और गिड़गिड़ाहट के साथ, जो उसे मृत्यु से बचा सकता था। यीशु ने अपने परमेश्वर से पुकार-पुकारकर और रो-रोकर भी विनती की। इतनी गहराई से और इतनी भारी चोट से दुःख ने उसे छुआ। उसकी सुनी गई। क्योंकि उसने केवल परमेश्वर पर भरोसा किया और केवल उसकी आज्ञा मानी। और उसका भय और आदर सब से बढ़कर किया। और यह तब, जब वह अनन्त पुत्र था, हाँ, परमेश्वर – पिता के बराबर। मनुष्य बनने से पहले वह यह आज्ञाकारिता नहीं जानता था। यह उसके लिए नई थी। मनुष्य के रूप में उसने आज्ञा मानना सीखा। वह सब दुःखों, विरोधों और विरोधाभासों के बावजूद आज्ञाकारी रहा। ये चुनौतियाँ व्यर्थ नहीं थीं। क्योंकि अब वह लक्ष्य पर है। परमेश्वर के सिंहासन पर सिद्ध किया हुआ। इस पवित्र जीवन और मृत्यु से कुछ अनोखा उत्पन्न हुआ है। उसका मिशन पूरा हो गया है। उसके विरोधियों के लिए वह क्रूस पर चढ़ाने का कारण था। हमारे लिए वह अनन्त उद्धार का कारण और आधार है। उसने इस रीति से अंतिम, अनन्त और सर्वव्यापी उद्धार रचा है। उन सब के लिए, जो उसके पीछे चलते और उसकी आज्ञा मानते हैं।

परमेश्वर ठीक ऐसे ही याजक को ढूँढ़ रहा था! यीशु अब मलिकिसिदक की रीति पर याजक है। इसका अर्थ क्या है, इस पर मैं आगे बात करूँगा। जब वह स्वर्ग पर चढ़ा, स्वर्गीय पवित्रस्थान में, तब परमेश्वर ने बड़े समारोह के साथ उसका स्वागत और सम्मान किया। परमेश्वर ने इन शब्दों से उसका अभिवादन किया: "तू मलिकिसिदक के समान महायाजक है"। परमेश्वर ने इस तरह सबको बता दिया कि अब अंततः उसके पास

यह याजक है, जिसे वह सदा से चाहता था। **और इस याजक के साथ अंततः एक अनन्त उद्धार भी, जिसे इसने अपने लहू के द्वारा रचा है!**

परिपक्वता और अपरिपक्वता

इस बारे में कहने को बहुत कुछ है। पर इसे समझाना भी उतना आसान नहीं है। क्योंकि दुःख की बात है कि तुम सुस्त और ऊँचा सुनने वाले हो गए हो। और यह तब, जब तुम मसीहा को बहुत समय से जानते हो। **तुम्हें तो कब के शिक्षक होना चाहिए था, और तुम हो सकते थे। पर तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचनों की वर्णमाला सीखने की आवश्यकता है।** और वह भी बिलकुल शुरू से, मानो तुम उसे पहली बार सुन रहे हो। तुम्हें छोटे शिशुओं की तरह दूध देना पड़ता है, ठीक-ठाक भोजन के बदले। हर कोई, जिसे – चित्र की भाषा में – अभी दूध मिलता है, अनुभवहीन है। वह परमेश्वर की धार्मिकता के वचन को सचमुच नहीं जानता। वह उसे समझाकर दूसरों तक भी नहीं पहुँचा सकता। वह एक छोटे नासमझ बच्चे जैसा है।

ठीक-ठाक भोजन **विश्वास में सयानों के लिए, आत्मिक रूप से परिपक्व लोगों के लिए** है। वे इसके आदी हैं और इसलिए भले और बुरे, गलत और सही में भेद करने में अभ्यस्त हैं। वे जानते हैं कि सताव और अस्वीकृति में भी वे यीशु मसीह और उसके सुसमाचार को कैसे और क्यों थामे रहते हैं।

अध्याय 6

फिर भी मैं अब फिर से शुरू से आरंभ नहीं करूँगा – जैसे स्कूल में आने वाले नए बच्चों के लिए छोटा पहाड़ा। यह तुमने अब सोचा होगा। नहीं। हमें आगे बढ़ना और सयाना होना है। मैं केवल कुछ बातों का उल्लेख करता हूँ, जो सही और महत्वपूर्ण हैं। वे तुम्हें मसीहा को जानने से पहले ही परिचित थीं। पर मसीहा के द्वारा तुमने उससे कहीं अधिक पाया है। उसका सारा धन थाम लो, जो स्वर्ग पर चढ़ गया है और परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा है। उसने सब कुछ पूरा किया है और साथ ही हमें भरपूर दान दिया है। इसलिए अपने यहूदी जातिभाइयों से इन पुरानी और जानी-पहचानी बातों के पीछे मत छिपो, जिन पर वे भी विश्वास करते हैं। इस तरह तुम तो बस उनके विरोध से बचना और कतराना चाहते हो, ताकि वे तुम्हें मसीहा यीशु के अनुयायी के रूप में न पहचानें।

कुछ आरंभिक शिक्षाओं को अब हमें पीछे छोड़ना होगा और फिर से शुरू से आरंभ नहीं करना है: मरे हुए और व्यर्थ कामों और विधियों से मन फिराना, जो बचा नहीं सकते; परमेश्वर पर विश्वास; धुलाइयों की या हाथ रखने की शिक्षा; या मरे हुओं के पुनरुत्थान और अनन्त न्याय की शिक्षा। जब परमेश्वर समय और अवसर देगा, तो हम इन पर भी फिर बात करेंगे। पर अभी बात यह है कि हम अपने स्वर्गीय महायाजक की महानता को, और जो उसने पूरा किया है और हमारे लिए करता है, उसे पहचानें और थामे रहें।

मसीहा से फिर जाना और उसके परिणाम

दुःख की बात है कि ऐसे लोग हैं, जो मसीहा पर विश्वास से फिर जाते हैं और यहूदी धर्म में लौट जाते हैं। और यह तब, जब वे एक बार ज्योति पा चुके थे, मसीहा को पहचान चुके थे, पवित्र आत्मा के स्वर्गीय वरदान का ठोस अनुभव कर चुके थे, हाँ उसे चख चुके थे। जबकि उन्होंने परमेश्वर का वचन सुना था और उसे समझा था। वे परमेश्वर के आने वाले नए संसार के सामर्थ्य के काम भी देख सके और उनमें सहभागी हुए। फिर भी वे मसीह से फिर गए। यह ऐसा है, मानो उन्होंने – जैसे उस समय यरूशलेम में – मसीहा को अपने लिए फिर से क्रूस पर चढ़ाया हो। और यह अपने यहूदी साथियों को, जो यीशु को अस्वीकार करते हैं, स्पष्ट रूप से दिखा दिया हो। उन्होंने यीशु को और अपने विश्वास को अपमान के लिए छोड़ दिया है। ऐसे लोगों के लिए, जो इस तरह विश्वास छोड़ देते हैं और व्यवस्था के अधीन जीवन और मरे हुए कामों की ओर लौट जाते हैं, मसीह की स्वतंत्रता और अनुग्रह को फिर से पाना लगभग असंभव है।

साग-सब्ज़ी, काँटे और ऊँटकटारे

एक चित्र, जो विश्वास के जीवन को, पर मसीह से फिर जाने को भी, अच्छी तरह स्पष्ट करता है, यह है: खेत की भूमि बार-बार वर्षा और परमेश्वर की आशीष पाती है और धूप और वर्षा के कारण उपयोगी और खाने

योग्य साग-सब्ज़ी उपजाती है। पर वही खेत की भूमि वर्षा के बावजूद केवल काँटे और ऊँटकटारे भी उगा सकती है। ऐसी चीज़ की किसी को आवश्यकता नहीं। वे घायल भी कर सकते हैं। इसलिए काँटे और ऊँटकटारे कोई अच्छा चिन्ह नहीं हैं। बल्कि एक प्रकार का श्राप हैं। अन्त में सब कुछ जला दिया जाता है। जो मसीह से फिर जाता है, वह मानो इसी भूमि के समान है। उस आशीष के बावजूद जो उसने अनुभव की, उस अच्छे फल के बावजूद जो उसने शायद कभी लाया हो, अब वह केवल खरपतवार उपजाता है।

इब्रानियों के बारे में भरोसा

परमेश्वर के प्रिय विश्वासी भाई-बहनो: मैं अब जान-बूझकर इतनी स्पष्ट और कड़ी बात कर रहा हूँ। पर तुम में हम अच्छे फल देखते हैं। प्रभु का उद्धार तुम्हारे लिए है। परमेश्वर कैसे अन्यायी हो सकता है और भूल सकता है कि तुमने उसके लिए और पवित्र लोगों के लिए क्या किया है? उसके नाम से, मसीहा से, तुम प्रेम करते हो। यह तुम्हारे कामों में, उसके लिए और पवित्र लोगों के लिए तुम्हारी सेवा में देखा जा सकता है। मैं चाहता हूँ कि तुममें से हर एक ऐसा ही परिश्रम करे। इसी से विश्वास की निश्चितता और अन्त तक आशा को थामे रहना पहचाना जाता है। इस तरह तुम सुस्त नहीं होगे। इसलिए उनका अनुकरण करो, जो विश्वास और धीरज के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञा के वारिस होते हैं।

शपथ और प्रतिज्ञा

अब्राहम के साथ भी ऐसा ही था। परमेश्वर ने उसे बहुत से वंशजों की प्रतिज्ञा दी और अपनी ही शपथ खाई: “निश्चय मैं तुझे बहुत आशीष दूँगा और तुझे बहुत बढ़ाऊँगा।” और क्योंकि अब्राहम धीरज से टिका रहा, उसने प्रतिज्ञा पाई – यद्यपि सब कुछ उसके विरुद्ध था और उसके पूरे होने में बहुत समय लगा। मनुष्य अपने से किसी बड़े की शपथ खाते हैं, परमेश्वर अपनी ही। शपथ या कसम हर विवाद का अन्त है।

इस तरह परमेश्वर ने प्रतिज्ञा के वारिसों को – वे तुम हो – अपनी ही शपथ के द्वारा अपनी योजना का न बदलना प्रमाणित किया और उसकी ज़मानत दी। इस तरह दो अटल बातों के द्वारा – अर्थात् उसकी शपथ और प्रतिज्ञा के द्वारा – हमें दृढ़ सांत्वना मिलती है कि हम लक्ष्य तक पहुँचेंगे। परमेश्वर झूठ नहीं बोल सकता। हमने उसमें, अपने मसीहा में, शरण ली है। उसने हमें नई आशा दी है। वह हमारे विश्वास को सामने की उस बात की ओर लगाती है, जो निश्चय ही पूरी होगी। यह आशा कोई मनचाहा सपना नहीं, कोई भ्रम नहीं है। यह हमारे लिए एक सुरक्षित और दृढ़ लंगर के समान है। हमारा भीतरी मन स्वर्ग से जुड़ा है। आशा का लंगर हम में नहीं गड़ा है, बल्कि सबसे भीतरी स्वर्गीय पवित्रस्थान में। परमेश्वर के सिंहासन के पास। क्योंकि वहीं यीशु हमारे लिए भीतर गया है। हमारे अग्रदूत के रूप में। वहाँ हम एक दिन उसके पीछे जाएँगे। यही हमारी प्रतिज्ञा है। यही हमारी आशा है। ऐसी उसने शपथ खाई है। हाँ, वह मलिकिसिदक की रीति पर हमारा महायाजक बन गया है।

अध्याय 7

अब्राहम और मलिकिसिदक

अब यह **मलिकिसिदक** कौन है? वह शालेम का राजा था, जो बाद में यरूशलेम कहलाया। अब्राहम के समय में। वह परमप्रधान परमेश्वर का याजक भी था। इस तरह वह एक याजक-राजा था। वह अब्राहम से मिलने आया और उसे आशीष दी, जब वह उन राजाओं पर विजय पाकर लौट रहा था, जिन्होंने उसके भतीजे लूत का अपहरण किया था। ऐसा उत्पत्ति 14 में वर्णन है।

अब्राहम ने उसे युद्ध की लूट का दसवाँ भाग दिया। मलिकिसिदक का अनुवाद है "धार्मिकता का राजा"। शालेम नगर का अर्थ भी शान्ति है। इस तरह वह धार्मिकता और शान्ति का राजा है। उसके बारे में हम न पिता को जानते हैं और न माता को। न ही कोई वंशावली, जो उसे याजकपद का अधिकारी बनाती। **उसकी तुलना हम परमेश्वर के पुत्र से करते हैं। वह मसीहा का एक शानदार पूर्व-चित्र है। मलिकिसिदक के जीवन का न आरंभ हम जानते हैं और न अन्त। परमेश्वर के पुत्र, मसीहा, के साथ भी ऐसा ही है। मलिकिसिदक की तरह वह सदा के लिए याजक है।**

यह राजा कितना महान रहा होगा, जिसे अब्राहम ने, हमारे मूल पिता ने, युद्ध की लूट का 10 प्रतिशत तक भेंट कर दिया। लेवी के पुत्रों को भी, जो याजक हैं, व्यवस्था के अनुसार यह अधिकार और कर्तव्य है कि वे अपने भाइयों से, अपने जातिभाइयों से, अपने पालन-पोषण के लिए 10 प्रतिशत लें। और यह तब, जब दोनों, यानी लेवी और जाति, अब्राहम के वंशज हैं और इसलिए सब एक ही स्तर पर हैं। मलिकिसिदक तो अब्राहम का संबंधी भी नहीं है और उसने उससे 10 प्रतिशत पाया। फिर उसने अब्राहम को आशीष दी, जिसने प्रतिज्ञा – जैसा मैंने पहले कहा – पाई थी। हमें इसमें जिस बात पर ध्यान देना है: सदा छोटा बड़े से आशीष पाता है! इसलिए अब्राहम ने मलिकिसिदक का आदर किया, उसका, जो उससे ऊपर था!

लेवी, यानी ऐसे मनुष्य जो मरणशील हैं, 10 प्रतिशत पाते हैं। इस दृष्टि से लेवी ने भी – जो दसवाँ भाग पाने वाला है – उसे मलिकिसिदक को दिया। क्योंकि लेवी ने यह अपने मूल पिता अब्राहम के द्वारा परोक्ष रूप से किया, जब वह मलिकिसिदक से मिला, यद्यपि लेवी अभी जन्मा भी नहीं था।

तो अब क्यों और किस लिए एक दूसरा याजक, मलिकिसिदक जैसा, अनिवार्य है? जबकि पापों की क्षमा, सिद्धता और पवित्रस्थान में सबके लिए खुला प्रवेश लेवियों के याजकपद के द्वारा सुनिश्चित होना चाहिए था! मूसा की व्यवस्था के आधार पर। जब परमेश्वर याजकपद को बदलता है, तो क्या इस व्यवस्था को भी नहीं बदलना पड़ेगा?

ठीक यही हम यीशु के बारे में कहते हैं, जो लेवी के गोत्र से नहीं आता। वह यहूदा के गोत्र से आता है। इसके बारे में मूसा ने कुछ नहीं कहा, जिसका याजक-सेवा से किसी प्रकार का संबंध हो। सब कुछ और भी स्पष्ट हो जाता है, जब अब सचमुच मलिकिसिदक जैसा एक याजक ठहराया जाता है। लेवीय याजक मानवीय वंश के नियमों की व्यवस्था के अनुसार बुलाया जाता है। **पर यीशु एक अविनाशी जीवन की शक्ति से बुलाया जाता है! मसीह के बारे में, पुत्र के बारे में, परमेश्वर अनोखे रूप से गवाही देता है: तू – और कोई नहीं – मलिकिसिदक की रीति पर याजक है।**

इस तरह याजकपद की मूसा वाली आज्ञा उसकी निर्बलता और व्यर्थता के कारण रद्द कर दी जाती है। इस व्यवस्था ने सिद्धता तक नहीं पहुँचाया। इसके विपरीत अब – इस नए याजक के द्वारा – एक बेहतर आशा लाई जाती है। इस आशा के द्वारा अब हम सब परमेश्वर के निकट आते हैं।

याजक के रूप में उसका ठहराया जाना परमेश्वर की शपथ के साथ हुआ। लेवी के गोत्र वालों के साथ ऐसा नहीं हुआ। यीशु के बारे में हम परमेश्वर को कहते सुनते हैं: "प्रभु ने शपथ खाई है और वह उससे कभी नहीं पछताएगा। तू मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए याजक है।" इस पद और इस काम में यीशु एक बेहतर वाचा का ज़मानतदार भी बन गया है, हाँ, उसकी गारंटी और सुरक्षा। इस पर मैं अभी विस्तार से बात करूँगा।

लेवीय याजकपद में एक याजक के बाद दूसरा आता था, क्योंकि वे सब कभी न कभी मर जाते थे। पर वह सदा बना रहता है। उसका याजकपद नहीं बदलता। वह अब किसी और को सौंपा भी नहीं जा सकता। क्योंकि उसकी याजक-सेवा कभी रुकती या समाप्त नहीं होती, वह सबका पूरा उद्धार कर सकता और उन्हें लक्ष्य तक पहुँचा सकता है। **उन सबको, जो उसके द्वारा प्रार्थना और आराधना में परमेश्वर के पास आते हैं। वह सदा जीवित है, ताकि परमेश्वर के सिंहासन के पास उनके लिए खड़ा हो और उनके लिए प्रार्थना करे।**

ठीक ऐसे ही महायाजक की हमें आवश्यकता थी। ऐसा जन, जो हमारा उचित रूप से प्रतिनिधित्व कर सके। जो उसके समान इतना पवित्र, इतना निर्दोष और इतना निष्कलंक हो। जो पापियों से अलग होकर अब आकाशों से भी ऊँचा हो गया है। और परमेश्वर के सिंहासन पर बैठा है। ऐसा जन, जिसे पहले के सब याजकों की तरह यह आवश्यकता नहीं कि पहले अपने पापों के लिए बलिदान चढ़ाए, और फिर जाति के पापों के लिए। नहीं, उसने अपने लिए बलिदान नहीं चढ़ाया। जाति के लिए उसने एक ही बार में सदा के लिए अपने आप को क्रूस पर बलिदान कर दिया।

मूसा की व्यवस्था ऐसे मनुष्यों को महायाजक ठहराती है, जिनमें निर्बलता है। ऐसे, जो पाप करते हैं। और मरते हैं! परमेश्वर की शपथ का वचन, जो व्यवस्था दिए जाने के बाद आया, **पुत्र** को ठहराता है। वह इस सेवा के लिए सिद्ध किया गया। अपने जीवन, अपनी मृत्यु और महिमा में अपने मुकुट पहनाए जाने के द्वारा। सारे अनन्तकाल के लिए।

अध्याय 8

जो कुछ हम कह रहे हैं, उसकी **मुख्य बात** यह है: **हमारा एक महायाजक है, जो स्वर्गीय सिंहासन-कक्ष में, स्वर्गीय पवित्रस्थान में, बैठ गया है।** परमेश्वर के प्रताप के दाहिने हाथ। वह सच्चे पवित्रस्थान का सेवक है। उसका नहीं, जिसे कभी मनुष्यों ने खड़ा किया था, बल्कि उसका, जिसे स्वयं प्रभु ने बनाया है।

हर महायाजक इसलिए ठहराया जाता है कि भेंटें और बलिदान चढ़ाए। अपनी सेवा करने के लिए उसे इनकी आवश्यकता होती है। यदि मसीह पृथ्वी पर होता, तो वह याजक हो ही नहीं सकता था, क्योंकि लेवीय याजक तो पहले से व्यवस्था के अनुसार भेंटें चढ़ाते हैं। यह लेवीय सेवा और उनका तम्बू-पवित्रस्थान स्वर्गीय वास्तविकताओं का प्रतिरूप है। **सारी पृथ्वी की उपासना और पवित्रस्थान स्वर्गीय बातों की छाया है।** जब मूसा ने यह तम्बू खड़ा किया, तो परमेश्वर का निर्देश उसे यह था: "ध्यान रख कि तू सब कुछ वैसा ही तैयार करे, जैसा मैंने तुझे पहाड़ पर दिखाया है"।

नई वाचा

हमारे महायाजक की सेवा कितनी श्रेष्ठ है! इसके साथ-साथ वह एक नई वाचा का मध्यस्थ भी बन गया है। यह कहीं बेहतर प्रतिज्ञाओं के आधार पर हमारे लिए ठहराई गई। यदि व्यवस्था की पहली वाचा निर्दोष होती, तो दूसरी की कभी खोज न की जाती। क्योंकि तब, यिर्मयाह 31 में, प्रभु ने अपनी प्रजा को डाँटते हुए कहा: "देखो, ऐसे दिन आएँगे, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक **नई वाचा** बाँधूँगा। वह उस वाचा के समान नहीं होगी, जो मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ उस दिन बाँधी, जब मैंने तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें मिस्र से निकाला। तुम मेरी वाचा में नहीं चले। तब मैंने फिर तुम्हारी सुधि नहीं ली।"

पर यह वह नई वाचा है, जो मैं वाचा तोड़ने के इन अन्धकार भरे दिनों के बाद इस्राएल के घराने के लिए फिर से स्थापित करूँगा: **मैं अपनी सिद्ध व्यवस्था को उनके मन में बैठाऊँगा। हाँ, मैं उसे उनके हृदय पर लिखूँगा। मैं फिर उनका परमेश्वर होऊँगा, जिसे वे जानते हैं। वे मेरी प्रजा होंगे। तब उन्हें अपने पड़ोसी को यह सिखाना नहीं पड़ेगा: प्रभु को, हमारे परमेश्वर को, पहचानो! क्योंकि तब वे सब, छोटे से लेकर बड़े तक, मुझे सचमुच जानेंगे। मैं उनकी भूलों के बावजूद उन पर अनुग्रह करूँगा। मैं उनके पापों को फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा।**

क्योंकि वह एक नई वाचा की बात करता है, उसने पहली को पुरानी ठहरा दिया है। जो पुराना होता है, वह जीर्ण हो जाता है। वह शीघ्र ही सदा के लिए मिट जाता है।

जब सनातन कुछ नया करता और देता है, तो वह आवश्यक भी होता है और अद्भुत भी।

अध्याय 9

पहली और पुरानी वाचा की आराधना के बारे में विवरण

पहली वाचा में पृथ्वी के पवित्रस्थान में आराधना के लिए सटीक नियम थे। यह तम्बू-पवित्रस्थान, बाद में मन्दिर भी, ऐसा दिखता था: तम्बू के पहले भाग में सात शाखाओं वाली दीवट और भेंट की रोटियों की मेज़ थी। वह पवित्रस्थान था। आगे का या पहला तम्बू। दूसरा तम्बू, या दूसरे पर्दे के पीछे का दूसरा भाग, परमपवित्र स्थान कहलाता है: पवित्रों में पवित्र। ठीक उसके सामने सोने की धूप की वेदी थी। और परमपवित्र स्थान में वाचा का सन्दूक था। लकड़ी का एक सन्दूक, जो पूरी तरह सोने से मढ़ा हुआ था। उसमें मन्ना से भरा सोने का एक घड़ा था, जंगल की यात्रा की स्वर्गीय रोटी। और हारून की छड़ी, जिसमें कोंपलें निकल आई थीं। और अन्त में पहली वाचा की व्यवस्था की पटियाएँ। सन्दूक के ऊपर दोनों सिरों पर महिमा के करूब थे, सोने के दो स्वर्गदूत, जो सन्दूक के ढकने की ओर नीचे देखते थे। इसे प्रायश्चित्त का ढकना भी कहते हैं। ये सब विवरण तुम जानते हो। इसलिए मुझे इनका आगे वर्णन करने की आवश्यकता नहीं।



क्योंकि तम्बू-पवित्रस्थान इस तरह बना और बँटा हुआ है, इसलिए एक याजक हर दिन पहले भाग में अपनी सेवा करने जाता है। दूसरे भाग में केवल महायाजक जाता है। वर्ष में केवल एक बार। वह बलिदान का लहू लेकर भीतर जाता है। इसे वह अपने लिए और जाति के पापों के लिए चढ़ाता है। इसके द्वारा पवित्र आत्मा स्पष्ट करता है कि परमपवित्र स्थान का मार्ग न खुला है और न ज्ञात है, जब तक पहला भाग सीधा प्रवेश संभव नहीं करता। इसलिए वह समय, जिसमें यह सारी सेवा की जाती है, अनन्त उद्धार और क्षमा की दृष्टि से व्यर्थ है। **क्योंकि सब भेंटें और बलिदान विवेक का बोझ नहीं उतार सकते, चढ़ाने वालों को सिद्ध करना तो दूर की बात है।** क्योंकि खाना, पीना और धुलाइयाँ बाहरी बातें हैं, जो हृदय को सिद्ध, शुद्ध या परिवर्तित नहीं कर सकतीं। पर अब वह समय आ गया है, जब मनुष्य का विवेक सिद्ध, शुद्ध, हाँ, मुक्त हो सकता है।

एक नया याजक, स्वर्गीय पवित्रस्थान में एक अनन्त छुटकारा

क्योंकि मसीहा आ गया है। सिद्ध बातों का महायाजक। जिसकी सेवा सिद्धता लाती है। जैसा पहले से कहा और घोषित किया गया था। वह एक बड़े, हाँ सिद्ध पवित्रस्थान के लिए आया है। कोई पृथ्वी का, हाथों से बना हुआ नहीं। वह इस संसार का है ही नहीं। उसका बकरों और बछड़ों के लहू से भी अब कोई संबंध नहीं। क्योंकि यहाँ मसीह का लहू काम करता है। **जब उसके अपने लहू ने, उसके अपने जीवन ने, अनन्त छुटकारा प्राप्त कर लिया, तब वह स्वर्गीय पवित्रस्थान में भीतर गया।** वह अपने बहाए हुए लहू की शक्ति और अनन्त मूल्य में भीतर गया। उसका लहू और जीवन पशुओं के लहू और जीवन से हर दृष्टि में बढ़कर है। वह असीम रूप से अधिक मूल्यवान है, तुलना के योग्य भी नहीं।

और वह पृथ्वी के पवित्रस्थान के महायाजक की तरह पवित्रस्थान से फिर बाहर नहीं आता। उसे फिर बाहर आने की आवश्यकता भी नहीं है। क्योंकि उसने तो हमारे लिए एक अनन्त और सिद्ध छुटकारा प्राप्त कर लिया है। दोहराने को कुछ नहीं है।

यदि बकरों और साँड़ों का लहू और एक कलोर की राख, जो पानी के साथ उन पर छिड़की जाती थी जिन्होंने किसी शव को छुआ था, बाहरी रूप से पवित्र करती है – **तो मसीह का लहू कितना अधिक सच्चा पवित्रीकरण और समर्पण उत्पन्न करेगा।** क्योंकि उसने अनन्त आत्मा की शक्ति और अगुवाई से स्वेच्छा से अपने आप को परमेश्वर को अर्पित किया। क्रूस पर बलिदान हुआ। और वह भी बिना किसी कलंक या दोष के। उसका लहू पशु-बलियों के लहू की तरह बाहरी रूप से शुद्ध और पवित्र नहीं करता। नहीं। वह तुम्हारे विवेक को शुद्ध करता है! और वह भी मरे हुए और व्यर्थ व्यवस्था के कामों से, जिनके बारे में तुम जानते हो कि वे तुम्हें सिद्ध नहीं करते। एक स्वतंत्र और शुद्ध विवेक के साथ तुम अंततः जीवित परमेश्वर की सेवा कर सकते हो। मुक्त और शुद्ध हृदयों के साथ।

वसीयत, मीरास और लहू के द्वारा शुद्धि

वह परमेश्वर के साथ एक नई, दूसरी वाचा का मध्यस्थ बन गया है। क्योंकि वह मरा और पहली वाचा के अधीन किए गए अपराधों से हमारे छुटकारे के लिए अपने आप को बलिदान किया। उसके द्वारा, हमारे मध्यस्थ के द्वारा, वे सब, जिन्होंने सुसमाचार की बुलाहट को ग्रहण किया, प्रतिज्ञा की हुई और अनन्त मीरास पा सकते हैं।

वाचा का बाँधा जाना तभी लागू होता है, जब किसी बलि की मृत्यु हो चुकी हो। किसी बलि की मृत्यु और लहू के बिना वह निष्प्रभावी है। इसलिए पहली, पुरानी वाचा भी लहू से स्थापित की गई। जब मूसा ने जाति को वाचा की सब आज्ञाएँ पढ़कर सुनाईं, तो उसने बलियों का लहू पानी और लाल ऊन के साथ वाचा की पुस्तक पर और सारी जाति पर छिड़का। उसने कहा, जैसा निर्गमन 24 बताता है: "यह उस वाचा का लहू है, जिसके प्रति अब तुम बँधे हो।" पर केवल व्यवस्था की पुस्तक और जाति पर ही नहीं छिड़का गया। तम्बू-

पवित्रस्थान और उपासना के पात्र भी, हाँ लगभग सब वस्तुएँ लहू से शुद्ध की जाती हैं। ऐसा व्यवस्था स्वयं निर्धारित करती है। इसलिए**व्यवस्था के अधीन, पुरानी वाचा में,**लहू बहाए बिना पापों की न क्षमा है और न शुद्धि।

एक बार बलिदान हुआ – एक बार भीतर गया: पूरा हो चुका था

यह आवश्यक था कि तम्बू, जो स्वर्गीय पवित्रस्थान का प्रतिरूप है, लहू के द्वारा शुद्ध किया जाए। पर स्वर्गीय पवित्रस्थान के लिए कहीं बेहतर बलिदान आवश्यक था। **क्योंकि जैसा सब जानते हैं, मसीह पृथ्वी के और मनुष्यों के बनाए पवित्रस्थान में नहीं गया, बल्कि सीधे स्वर्ग में, परमेश्वर के सिंहासन के पास। वहाँ वह महायाजक के रूप में हमारे लिए खड़ा है। परमेश्वर के मुख के सामने।**

वह वहाँ इसलिए भीतर नहीं गया कि बार-बार अपने आप को बलिदान करे। पुरानी वाचा के अधीन महायाजक के साथ ऐसा था, जो बार-बार भीतर जाता है, अपने लहू के साथ नहीं, बल्कि पशु-बलि के लहू के साथ। इस याजक- और बलिदान-व्यवस्था के अनुसार मसीह को बहुत बार दुःख उठाना पड़ता।

नहीं, मसीहा परमेश्वर के ठहराए हुए समय में एक बार पृथ्वी पर प्रकट हुआ। युगों की पूर्णता में, जब पुराना अपने अन्त पर पहुँचा। **वह इसलिए आया कि क्रूस पर स्वेच्छा से अपने आत्म-समर्पण के द्वारा, सिद्ध बलिदान के रूप में, पाप की समस्या को एक ही बार में और अंतिम रूप से हल करे। ताकि अपने बलिदान के द्वारा पाप को – जो हमें परमेश्वर से अलग करता है और रची हुई वस्तुओं को अशुद्ध करता है – ऐसे दूर कर दे कि वह फिर कभी लौट न सके। और वह भी उतना ही एक बार और अटल रूप से, जितना मनुष्य के लिए एक बार मरना और उसके बाद परमेश्वर के न्याय के सामने उपस्थित होना ठहराया गया है।**

कोई मनुष्य दो बार नहीं मरता, मसीह भी नहीं! ठीक उतने ही एक बार मसीहा एक ही बार में सदा के लिए बलिदान के रूप में मरा, **ताकि बहुत से मनुष्यों के पापों को अपने ऊपर ले ले। उन्हें अपने भीतर ले ले और मृत्यु में ले जाए, ताकि उन्हें ऐसे मिटा दे, मानो वे कभी थे ही नहीं। पाप का अन्त इस तरह हुआ कि उसने उसे अपने ऊपर लिया और क्रूस पर मृत्यु में ऊपर ले गया, ठीक वैसे ही जैसे जाति के पापों के साथ बकरा जंगल में, मृत्यु के देश में, भेजा जाता था। उसने पाप को दूर कर दिया, मिटा दिया और उसका अन्त कर दिया।**

प्रायश्चित्त के महान दिन पर जाति महायाजक के तम्बू से लौटने की प्रतीक्षा करती थी, क्योंकि तब प्रायश्चित्त और क्षमा परमेश्वर की ओर से स्वीकार और पूरी हो चुकी होती थी। इसी तरह मसीह भी स्वर्गीय पवित्रस्थान को फिर भी एक अंतिम बार छोड़ेगा: इसलिए नहीं कि फिर से पापों की क्षमा के लिए भीतर जाए। नहीं, वह बाहर आएगा और उन सब पर प्रकट होगा, जो उसकी बाट जोहते हैं। फिर एक बार: **पाप की समस्या को हल करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें, जो उस पर भरोसा रखते हैं, पूरी तरह बचाने और स्वर्गीय पवित्रस्थान में, परमेश्वर के अनन्त विश्राम में, ले जाने के लिए।**

अध्याय 10

उस समय के बलिदानों की निर्बलता और मसीहा की बलिदान की तत्परता

व्यवस्था अपने बलिदान के नियमों के साथ और तम्बू-पवित्रस्थान को बनाने के निर्देश किसी बड़ी बात की छाया जैसे हैं। अर्थात् उन सिद्ध बातों की, जो अब मसीह में प्रकट हुई हैं और आ गई हैं। इसलिए बलिदान, जो बार-बार, हर वर्ष प्रायश्चित्त के महान दिन पर, चढ़ाए जाते हैं, कभी सिद्ध नहीं कर सकते। सारी जाति इस दिन क्षमा की आशा में तम्बू-पवित्रस्थान के पास आती है। यदि वहाँ क्षमा और सिद्धता मिलती, तो सारी बलिदान-सेवा समाप्त की जा सकती थी। तब जाति और याजकों को बिना क्षमा हुए पापों के कारण अपने विवेक में कोई चिंता न करनी पड़ती। प्रायश्चित्त के महान दिन पर – और हर दूसरे बलिदान में भी – **बकरों और साँड़ों का लहू पापों को दूर कर ही नहीं सकता। यद्यपि हर वर्ष का प्रायश्चित्त का दिन अपनी बलिदान-विधियों के साथ बार-बार पापों की याद दिलाता है! पर क्षमा और शुद्धि की कोई स्थायी निश्चितता वह नहीं दे सका। शायद एक वर्ष के लिए विवेक की शान्ति।**

जब परमेश्वर का पुत्र संसार में आया, तो उसने भजन संहिता 40 के शब्दों की ओर संकेत किया और दिखाया कि वे स्वयं उसके द्वारा पूरे होते हैं: “हे परमेश्वर, पशु-बलि और अन्नबलि तूने वास्तव में कभी नहीं चाही। पर मेरे लिए तूने एक देह तैयार की। होमबलि और पापबलि से तू वास्तव में प्रसन्न नहीं हुआ। तब मैंने कहा: मेरी ओर देख। मैं तेरी उद्धार की इच्छा पूरी करने आता हूँ। यह पुराने नियम की पुस्तक में मेरे बारे में पहले ही लिखा हुआ है।” परमेश्वर के ये शब्द बलिदान के नियमों वाली मूसा की व्यवस्था से बहुत बाद में आते हैं और किसी नई और कहीं बेहतर बात की घोषणा करते हैं।

जब उसने कहा: “सब बलिदानों से तू प्रसन्न नहीं था, हाँ तू उन्हें चाहता ही नहीं था” (यद्यपि वे परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार चढ़ाए जाते हैं), तब पुत्र ने, जो परमेश्वर के हृदय और इच्छा को समझता था, कहा: **“देख, मैं तेरी उद्धार की इच्छा पूरी करने आता हूँ”।**

इस तरह वह अपने मनुष्य होने में पहली वाचा और उसकी बलिदान-सेवा को हटा देता है, ताकि दूसरी, नई और अनन्त वाचा को स्थापित करे। **क्योंकि परमेश्वर की उद्धार की इच्छा के द्वारा, जिसे मसीहा ने पूरा किया और सिद्ध किया, हम पवित्र किए गए हैं। पापों से शुद्ध किए गए। सिद्ध किए गए, ताकि परमेश्वर के निकट आएँ और उसकी सेवा करें। गुलगुता पर क्रूस पर यीशु की देह के एक ही बार चढ़ाए गए बलिदान के द्वारा।**

सारांश: नई और अनन्त वाचा में व्यापक, अनन्त उद्धार

पुरानी वाचा का हर याजक हर दिन खड़ा होकर अपनी सेवा करता है। वह बार-बार वही बलिदान चढ़ाता है, जो पापों को कभी दूर नहीं कर सकते। करें भी कैसे? बलि किए गए पशु तो पाप के बारे में कुछ नहीं जानते। पर मसीह ने, सिद्ध याजक ने, पापों के लिए एक ही बलिदान चढ़ाया: अपने आप को। वह पवित्र और पापरहित। उसके बलिदान ने **सब कुछ** ठीक कर दिया है। उसे दोहराना नहीं पड़ता। इसलिए वह सदा के लिए **बैठ गया** है। परमेश्वर के सिंहासन पर। परमेश्वर के दाहिने हाथ, जो अपने पुत्र के स्वेच्छा से दिए गए और अनोखे बलिदान का उत्सव मनाता है। वहाँ सिंहासन के पास वह प्रतीक्षा करता है, जब तक उसके सब शत्रु पूरी तरह उसके अधीन न हो जाएँ। क्योंकि बहुत से शत्रु हैं, वे जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया, और वे जो उसके उद्धार के कार्य को अस्वीकार करते हैं।

क्योंकि केवल एक ही सिद्ध बलिदान के द्वारा उसने हमें – जो विश्वास करते हैं – सदा के लिए पवित्र कर दिया है। इस तरह उसने हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचा दिया है। हमें वैसा बनना था, जैसा वह हमें चाहता था। हमें, जो स्वयं परमेश्वर के द्वारा पवित्र किए जाते हैं, ताकि उसके साथ उसके पवित्रस्थान में रहें।

ठीक इसी की गवाही पवित्र आत्मा पुराने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह के शब्दों में देता है: "यह वाचा मैं उनके साथ स्थापित करूँगा, प्रभु कहता है। **मैं अपनी व्यवस्था उनके हृदयों में डालूँगा और उनके मन पर लिखूँगा।**" और: "**उनके पापों और अधर्म के कामों को मैं फिर कभी स्मरण नहीं करूँगा।** वे क्षमा किए गए हैं, मानो कभी हुए ही न हों। मैं उन्हें फिर कभी तुम्हारे सामने नहीं रखूँगा और न तुम पर लगाऊँगा।" इसलिए जब क्षमा हो चुकी है, जब परमेश्वर ने उसे घोषित और पक्का कर दिया है, तो पाप के लिए फिर कभी किसी और बलिदान की आवश्यकता नहीं। हारून की सारी बलिदान-सेवा समाप्त हो गई है, इस तरह अनावश्यक, हाँ व्यर्थ हो गई है।

परमपवित्र स्थान में जीवन

अब एक बड़ा लक्ष्य पूरा हो गया है। कुछ ऐसा, जो सदा से परमेश्वर के हृदय की इच्छा थी। स्वर्ग, परमेश्वर का निवास और सिंहासन-कक्ष, खुला है। सबके लिए। हम उसके पास आ सकते हैं। अब हमें पूरा भरोसा है और हम निश्चिन्त होकर, बिना डर के, सबसे भीतरी स्वर्गीय पवित्रस्थान में परमेश्वर के सिंहासन के सामने आ सकते हैं। विश्वास में। अभी देह में नहीं। यीशु के लहू के द्वारा। एक **नए मार्ग** पर, जो पहले नहीं था। जो जीवित है। वह मृत्यु की ओर नहीं, बल्कि जीवन में ले जाता है। परमेश्वर की पवित्र और प्रेम भरी उपस्थिति के भीतर। इस नए और जीवित मार्ग पर हम लगातार आगे बढ़ सकते हैं। उसने स्वयं, यीशु ने, इसे हमारे लिए खोला और मुक्त किया है। उस पर्दे के बीच से, जो पृथ्वी के पवित्रस्थान में प्रवेश को रोकता है। इसलिए पर्दे को फटना ही था। एक जीवित यीशु ने हमें दिखाया कि परमेश्वर कौन है और हमें कैसा होना चाहिए था, पर हम नहीं थे। अपने जीवन में वह उस पर्दे के समान था, जो अभी फटा नहीं था। केवल उसके

बलिदान ने, हमारे लिए उसकी मृत्यु ने, मार्ग खोल दिया। इसके साथ पुरानी याजक- और बलिदान-उपासना सदा के लिए समाप्त हो गई है।

और वह परमेश्वर के घर पर हमारा भी महान याजक है। वह हमारे लिए परमेश्वर के पास है। वह हमारा हाथ पकड़ता है और हमें परमेश्वर की उपस्थिति में ले जाता है। वह परमेश्वर की उपस्थिति में भी हमारी अगुवाई करता है, हमारी सब निर्बलताओं, भूलों और पापों के बावजूद, जिनका हम अभी भी अनुभव करते हैं। वह इसकी हर ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेता है, ताकि हम भरोसे के साथ स्वर्गीय पवित्रस्थान में प्रार्थना कर सकें, आराधना कर सकें, विश्राम कर सकें और परमेश्वर की सुन सकें।

तो आओ, अब हम सचमुच और लगातार परमेश्वर के पास जाएँ! उसके सिंहासन के पास। सच्चे हृदय के साथ। ऐसे हृदयों को परमेश्वर ढूँढ़ता है। पूरी निश्चितता में, जो केवल विश्वास हमें देता है। हमारे हृदय तो उसके लहू से शुद्ध किए गए हैं। ऐसा विवेक, जो हमारे पाप के कारण हम पर लगातार दोष लगाता है, अब नहीं रहा। परमेश्वर के वचन के शुद्ध जल से भी हम – चित्र के अर्थ में, निश्चय ही – पाप की गन्दगी से धोए गए हैं।

इतना भरपूर दान पाकर हम इसके सिवा और क्या करें कि अपने आसपास के लोगों के सामने अपनी आशा का अंगीकार करें? उसे शत्रुता के सामने छोड़ न दें, बल्कि दृढ़ता से थामे रहें। **एक आशा, जो स्वयं मसीहा है, परमेश्वर के सिंहासन पर, जहाँ से ब्रह्माण्ड पर शासन होता है। एक आशा, कि एक दिन वह सच और दिखाई देने वाला होगा, जो आज हमारे पास विश्वास में पहले से है।** क्योंकि कोई इतना विश्वासयोग्य नहीं, जितना वह, जिसने हमें यह प्रतिज्ञा दी।

हाँ, आओ, हम प्रेम और देखभाल में एक दूसरे पर ध्यान दें। निगरानी के लिए नहीं। बल्कि एक दूसरे को प्रेरित करने के लिए: प्रेम और कृतज्ञता से भलाई करने के लिए। अपने पड़ोसियों का साहस बढ़ाने के लिए। आओ, हम बार-बार इकट्ठे हों और सहभागिता रखें, प्रार्थना करें और आराधना करें। कोई भी बात हमें इसे यथासंभव नियमित रूप से करने से रोक न सके। इस तरह हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं। कुछ लोगों ने इसे पूरी तरह छोड़ दिया है, थक गए हैं और इस खतरे में हैं कि विश्वास और आशा को भी छोड़ दें। आओ, हम आगे बढ़कर एक दूसरे को सहभागिता के लिए और आशा में साहस दें। **क्योंकि हमारे प्रभु यीशु और परमेश्वर का महान दिन निकट और निकट आता जा रहा है**। दिन प्रतिदिन।

पुरानी वाचा और पुरानी बलिदान-व्यवस्था में लौटना और उसके परिणाम

जो विश्वास और आशा को छोड़ देता है, जान-बूझकर और इरादे से, उसकी समस्या गंभीर है। क्योंकि उसे एक बार सत्य को पहचानने का अवसर मिला, पर फिर वह उसे फेंक देता है। जब उसने एक बार यीशु के बलिदान को पहचाना और फिर उसे ठुकरा दिया – उसके लिए कोई और बलिदान नहीं, जिसका वह सहारा ले सके। तब कौन सा बलिदान उसे बचा सकता है? उसके लिए केवल ईश्वरीय न्याय की भयभीत प्रतीक्षा बचती है। क्योंकि पुरानी बलिदान-व्यवस्था तो उसके विवेक को मुक्त नहीं कर सकती। केवल न्याय की उस

न रुकने वाली आग की प्रतीक्षा बचती है, जो मसीहा के शत्रुओं पर पड़ेगी। जिसने मूसा की व्यवस्था को ठुकराया, वह भी गवाहों की गवाही पर बिना दया के मरता है। तुम क्या सोचते हो, उसका दण्ड कितना भयानक होगा, जो अब परमेश्वर के पुत्र को, मसीहा यीशु को, पाँवों तले रौंदता है – मानो वह कूड़ा हो? **और नई और अनन्त वाचा के लहू को, जो पवित्र और सिद्ध करता है, अशुद्ध समझता है?** और उस आत्मा का अपमान करता है, जो कभी उसके पास यह अनुग्रह लाया और उसे इसके बारे में ज्योति दी, मानो वह सबसे बुरी बात हो जो उसके साथ हुई? हम यह इसलिए कहते हैं, क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसके बारे में मूसा ने व्यवस्थाविवरण 32 में कहा: "पलटा लेना और बदला देना मेरा काम है", प्रभु कहता है। और यह भी: "प्रभु अपनी प्रजा का न्याय करेगा।" इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता। अपने पापों के साथ, मसीहा और उसके बलिदान को ठुकराकर जीवित परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक है, जबकि मनुष्य ने एक बार सब कुछ पहचाना और विश्वास किया था। सनातन से मिलने से कोई बच नहीं सकेगा। एक बात बिलकुल निश्चित है: मृत्यु। और उसके बाद न्याय। सब जीवित परमेश्वर से मिलेंगे।

उस समय की दृढ़ता और दुःख सहने की तत्परता की याद

देखो तो, तुमने अपने विश्वास के मार्ग पर मसीह के लिए पहले ही क्या-क्या सहा है। आरंभ में, बहुत दिन पहले, जब तुम अनुग्रह के आत्मा के द्वारा ज्योति पा चुके थे, तुमने असाधारण रूप से बहुत संघर्ष और दुःख उठाए। तुम विश्वास में दृढ़ बने रहे। लोगों ने बुरे शब्दों से तुम्हारी निन्दा की, तुमसे सबसे गए-गुज़रे कूड़े जैसा व्यवहार किया और तुम्हें सताया। इस तरह तुम सबके सामने तमाशा बनाए गए। और जब यह तुम पर सीधे नहीं आया, तब भी तुम उनके साथ विश्वासयोग्यता से खड़े रहे, जिनके साथ ऐसा हुआ। विश्वास के कारण बन्दी बनाए गए लोगों की तुमने ऐसे सहायता की, मानो तुम स्वयं बन्दीगृह में हो। तुमने आनंद के साथ यह भी सहा कि तुम्हारी सम्पत्ति लूट ली गई। **तुम जानते थे कि तुम सबके पास एक ऐसी सम्पत्ति है, जो कहीं बेहतर है और सबसे बढ़कर सदा बनी रहती है।**

इसलिए अब अपने भरोसे, अपने विश्वास और अपनी आशा को फेंक न दो, उनकी तरह जो विश्वास छोड़ देते हैं। खुलकर यीशु के, मसीहा के, पक्ष में खड़े हो! **क्योंकि एक बड़ा प्रतिफल तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। धीरज से टिके रहो!** तुमने तो परमेश्वर की इच्छा पूरी की है। मसीहा यीशु को ग्रहण किया है। अब उसके पीछे भी चलो! उसमें बने रहो – ताकि तुम्हारे जीवन में परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी हो। तब तक अब बहुत ही थोड़ा समय बाकी है, जैसा भविष्यद्वक्ता हबक्कूक कहता है। आने वाला, मसीह, आएगा और – सारे दुःख का सदा के लिए अन्त कर देगा। इसका कारण है कि वह समय अभी नहीं आया। और वह आज तक नहीं आया है।

पर "धर्मी **विश्वास से** जीवित रहेगा! पर यदि वह पीछे हटे और विश्वास को फेंक दे, तो मैं उससे प्रसन्न नहीं होऊँगा।" पर हम उनमें से नहीं हैं, जो पीछे हटते हैं, विश्वास के लक्ष्य को छोड़ देते हैं और विनाश में अन्त पाते हैं। नहीं! हम उनमें से हैं, जो पूरे उद्धार के लिए विश्वास करते हैं। हम मसीहा पर उद्धार देने वाले विश्वास को थामे रहते हैं – जब तक मसीह फिर न आए।

अध्याय 11

विश्वास से जीना – विश्वास से डटे रहना

विश्वास ही निर्णायक बात है। पर विश्वास ठीक-ठीक क्या है? विश्वास एक दृढ़ निश्चय है, अटल भरोसा, हाँ, मानो उस बात को पहले से पा लेना, जिसकी मनुष्य आशा करता है – और जो आने वाली है। विश्वास के लिए भविष्य की बात मानो पहले से सच हो चुकी है।

विश्वास एक कायल होना है, उस बात का निश्चय, जो दिखाई नहीं देती। या अभी दिखाई नहीं देती। इसे मैं तुम्हें हमारे पूर्वजों के, हमारे जैसे मनुष्यों के, साहस देने वाले उदाहरणों से स्पष्ट करूँगा। उनमें विश्वास जीवित था। वह तब भी मन्द नहीं पड़ा, जब कठिनाई आई। तुम्हारे साथ भी स्थिति कठिन है और चुनौती भरी है। इसलिए: उन्हें अपना आदर्श बनाओ।

केवल विश्वास ही समझता है कि संसार परमेश्वर के सृष्टि के वचनों के द्वारा अस्तित्व में आया। हम मनुष्यों में से कोई भी वहाँ न था और न किसी ने उसे देखा। शून्य से उसने संसार को रचा।

हाबिल

विश्वास ही से हाबिल ने मानव इतिहास के आरंभ में परमेश्वर को एक ग्रहणयोग्य पशु-बलि चढ़ाई। परमेश्वर के लिए यह उसके भाई कैन के बलिदान से बड़ा बलिदान था। उसने भूमि से उगे फल चढ़ाए। परमेश्वर ने पशु-बलि को स्वीकार करके यह गवाही दी कि हाबिल धर्मी था और कैन नहीं। हाबिल और उसके बलिदान का आज भी – यद्यपि यह बहुत पहले की बात है – एक जीवन से जुड़ा संदेश है: पापी होने के नाते हमें क्षमा और हमारे लिए एक बलिदान के द्वारा नई शुरुआत की आवश्यकता है। और वह मसीह है, जैसा मैंने विस्तार से बताया है।

हनोक

विश्वास ही से हनोक स्वर्ग में परमेश्वर के पास उठा लिया गया। बिना मरे। जीवित मनुष्य के रूप में वह स्वर्ग में परमेश्वर के पास गया। क्यों? क्योंकि परमेश्वर उसके जीवन से बहुत प्रसन्न था और उसे अपने पास रखना चाहता था – उसके बहुत से समकालीनों के विपरीत। विश्वास के बिना परमेश्वर को कभी प्रसन्न नहीं किया जा सकता। जो परमेश्वर के पास आता है, जो उसके निकट जाने का प्रयास करता है, उसे निश्चय ही विश्वास करना चाहिए कि वह है। पर केवल इतना ही नहीं। उसे यह भी विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर उन्हें प्रतिफल देता है और उन्हें उत्तर देता है, जो उसे सच्चाई से और लगातार खोजते हैं।

नूह

नूह को परमेश्वर से एक बड़ा जलपोत, यानी वह जहाज़ (Arche), बनाने की आज्ञा मिली। सूखी भूमि पर। आसपास कोई समुद्र नहीं। केवल विश्वास में ही वह ऐसा कुछ कर सकता था। परमेश्वर से चेतावनी पाकर उसने बहुत दशकों तक भयभीत प्रतीक्षा के साथ बनाया कि उस पर क्या आने वाला है। अपनी सबसे साहसी कल्पनाओं में भी वह इसकी तस्वीर नहीं बना सकता था। परमेश्वर की आज्ञा मानकर वह उसके पक्ष में खड़ा हुआ। साथ ही उसने – आज्ञाकारिता से जहाज़ बनाकर – उन मनुष्यों की भक्तिहीनता को दोषी ठहराया, जो परमेश्वर की नहीं सुनते थे। इस तरह वह एक धर्मी बना। विश्वास से।

अब्राहम

अब्राहम भी केवल विश्वास से ही आज्ञाकारी हो सका। परमेश्वर की आज्ञा सुनने के बाद उसने अपना देश छोड़ दिया। वह निकल पड़ा, बिना जाने कि लक्ष्य कहाँ है। एक ऐसे स्थान की ओर, जिसे उसे परमेश्वर से मीरास में पाना था।

विश्वास ही से वह उस देश में घूमता रहा, जिसकी उससे मीरास के रूप में प्रतिज्ञा की गई थी। अतिथि के रूप में वह एक अनजान क्षेत्र में, तम्बुओं में रहा। अपने पुत्र इसहाक और पोते याकूब के साथ। वे सब उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, जो अब्राहम को मिली थी।

वे एक पराए देश में बंजारों की तरह रहे। पर उनकी दृष्टि आगे थी। वे एक **नगर** की प्रतीक्षा करते थे, जिसकी नींव दृढ़ और अनन्त है। एक ऐसा नगर, जिसे मनुष्यों ने नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर ने बनाया है।

सारा

केवल विश्वास ही से सारा, यद्यपि वह बहुत बूढ़ी हो चुकी थी, एक बच्चा पा सकी। केवल इसलिए कि उसने विश्वास किया कि परमेश्वर विश्वासयोग्य है और अपनी प्रतिज्ञा सदा पूरी करता है। इसका यह भी अर्थ है कि अब्राहम से, जो स्वयं भी बहुत बूढ़ा था, कोई सन्तान उत्पन्न नहीं हो सकती थी। फिर भी उसकी आयु के बावजूद उससे अनगिनत लोग उत्पन्न हुए। जैसा परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की और पहले से कहा था। वे इतने हो गए, जितने आकाश के तारे या समुद्र के किनारे की रेत, चित्र की भाषा में कहें तो।

कुलपिता

ये कुलपिता विश्वास में मरे। वे मीरास की प्रतिज्ञा की शक्ति से जीते तो रहे। पर उस पर अधिकार वे अभी नहीं कर सके। उन्होंने मीरास को मानो दूर से देखा। उनका बंजारों जैसा जीवन गवाही देता था कि वे उस देश में परदेशी थे, बिना नागरिक अधिकारों के। जो ऐसे जीता है, वह स्पष्ट दिखाता है कि वह किसी और, हाँ बेहतर **स्वदेश** की खोज में है। उसकी नहीं, जहाँ से वे आए थे। वहाँ वे कभी भी लौट सकते थे। पर कनान में परदेशी होकर वे आगे देखते थे। ऊपर की ओर। वे एक **स्वर्गीय स्वदेश** की बाट जोहते थे। जहाँ परमेश्वर

वास करता है। इसलिए परमेश्वर इस्राएल के इन तीन कुलपिताओं का परमेश्वर कहलाने में लज्जित नहीं होता। वह अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर कहलाता है। उसी की ओर वे विश्वास में यात्रा कर रहे थे। इसलिए परमेश्वर ने स्वर्गीय स्वदेश में उनके लिए एक नगर तैयार किया है। एक अनन्त घर।

केवल विश्वास ही से अब्राहम अपने जीवन की सबसे बड़ी विश्वास की परीक्षा में खरा उतरा: जब उसने अपने एकलौते पुत्र, इसहाक को, प्रतिज्ञा के वाहक को, बलिदान किया। परमेश्वर ने उससे वचन दिया था कि उसी के द्वारा वंश सुरक्षित रहेगा। अब्राहम काँपते हृदय से बलिदान की ओर बढ़ा। क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर मरे हुओं को भी जिला सकता है। यद्यपि इसहाक का बलिदान अंतिम क्षण में स्वयं परमेश्वर ने रोक दिया, फिर भी यह ऐसा था, मानो उसने उसे पूरा कर दिया हो। **अब्राहम अपने पुत्र इसहाक को बाँहों में भर सका, मानो वह मरे हुओं में से जी उठा हो।**

विश्वास ही से इसहाक ने आने वाली बातों को ध्यान में रखकर अपने पुत्रों याकूब और एसाव को आशीष दी। ठीक वैसे ही विश्वास में याकूब ने अपनी मृत्यु से पहले यूसुफ के दोनों पुत्रों को आशीष दी। हर एक को अलग-अलग। और इस पर परमेश्वर की आराधना की। यूसुफ ने मृत्यु-शय्या पर विश्वास में पहले से देखा कि सब इस्राएली मिस्र को कैसे छोड़ेंगे। इसलिए वह आज्ञा दे सका कि तब उसकी हड्डियाँ भी साथ ले जाई जाएँ, ताकि वे कनान में विश्राम पाएँ।

मूसा

विश्वास ही से मूसा के माता-पिता ने अपने बच्चे को तीन महीने से अधिक छिपाए रखा। उन्होंने देखा कि परमेश्वर उसके साथ कुछ विशेष करना चाहता है। इसलिए वे फ़िरौन से नहीं डरे, जिसने सब नवजात लड़कों की मृत्यु की आज्ञा दी थी। विश्वास ही से सयाने मूसा ने फ़िरौन की बेटी का पुत्र बने रहना छोड़ दिया, हाँ, मानो साफ़ इनकार कर दिया। उसने पक्ष बदला और अपनी जाति इस्राएल के साथ खड़ा हुआ। वह उनकी निन्दा और उनके दुःख में साझी होना चाहता था। इस तरह उसने फ़िरौन के दरबार में पाप के थोड़े दिनों के और नाशवान सुख को ठुकरा दिया। उसने मसीह की निन्दा को – यदि हम आज की दृष्टि से इसे देखें और समझें – मिस्र के खज़ानों से बड़ा धन समझा। मूसा आगे देखता था, कनान में मिलने वाले प्रतिफल की ओर। वह फ़िरौन के क्रोध और सताव से नहीं डरा, जब उसने एक मिस्री को मार डाला था। वह इस आशा में दृढ़ बना रहा कि उसकी जाति छुटकारा पाएगी। तब भी, जब वह मिस्र से भाग गया और पूरे 40 वर्ष एक सुनसान देश में बिताए। उसने विश्वास किया और परमेश्वर की ओर, उस अनदेखे की ओर, ऐसे देखता रहा, मानो वह उसे सीधे अपनी आँखों के सामने देख रहा हो। विश्वास में उसने, जब वह फिर मिस्र लौट आया था, फसह मनाया। और फिर मेम्ने का लहू द्वार की चौखटों पर पोता – ताकि सब पहलौठे मृत्यु के दूत से बचे रहें।

विश्वास ही से सारा इस्राएल लाल समुद्र में से होकर निकल गया, जो दो भाग हो गया था। मानो सूखी भूमि पर। मिस्रियों ने, जो उनका पीछा कर रहे थे, भी ऐसा करने का प्रयास किया। उनके लिए विश्वास का

कोई महत्व नहीं था। इसलिए वे गिरती हुई लहरों में नाश हो गए।

विश्वास ही से यरीहो की दीवारें गिर पड़ीं, कनान का पहला नगर, जिससे उनका सामना हुआ। जब वे सात दिन तक नगर के चारों ओर चल चुके थे।

राहाब

एक वेश्या, राहाब, जो इस नगर की दीवार में रहती थी, दूसरों की तरह उसमें नाश नहीं हुई। क्योंकि उसने विश्वास ही से इस्राएल के दोनों भेदियों को बड़े खतरे में शरण दी थी। उसने देखा कि परमेश्वर इस्राएल की रक्षा करता है और कोई उनके सामने टिक नहीं सकता। उसने इस्राएल के परमेश्वर को सच्चा परमेश्वर पहचाना।

मैं और भी बहुत कुछ कह सकता हूँ। **गिदोन, बाराक, शिमशोन, यिप्तह, दाऊद और शमूएल और भविष्यद्वक्ताओं** के बारे में बता सकता हूँ। कि कैसे उन्होंने विश्वास से राज्यों को जीता। सब अधर्म के विरुद्ध धार्मिकता के काम किए। प्रतिज्ञाएँ पाईं। सिंहों को हराया। आग को बुझाया। तलवार के सताव से बच निकले। और पूरी निर्बलता में फिर से बल पाया। संघर्ष और युद्ध में वे बलवन्त हुए। आक्रमण करने वालों की भीड़ को उन्होंने पीछे हटा दिया। और स्त्रियों ने अपने मरे हुओं को पुनरुत्थान के द्वारा फिर पाया। दूसरे सताए गए और उन्होंने छुटकारा स्वीकार नहीं किया। ताकि अपने विश्वास का इनकार न करें। **क्योंकि वे एक बेहतर पुनरुत्थान पर विश्वास करते थे – अनन्त जीवन के लिए।** दूसरों का ठट्ठा उड़ाया गया और उन्हें कोड़े मारे गए। वे बेड़ियों में और बन्दीगृह में रहे। दूसरों को पत्थरवाह किया गया, आरे से चीरा गया, उनके सिर काटे गए। वे भेड़ों और बकरियों की खालें ओढ़े इधर-उधर घूमते रहे। बड़ी तंगी में रहे। सताए गए। बुरा व्यवहार सहा। संसार की दृष्टि में उनका न कोई मूल्य था, न महत्व, न प्रतिष्ठा। वे जंगलों और पहाड़ों में भटकते रहे। गुफाओं और धरती की दरारों में छिपते रहे।

ये सब, जिनका मैंने यहाँ नाम लिया है, जिनके विश्वास की गवाही दी गई, उन्होंने वह अभी नहीं पाया, जिसकी उनसे प्रतिज्ञा की गई थी। क्यों? क्योंकि परमेश्वर ने कुछ बेहतर ठहराया है। हमारे लिए! इसके लिए उन्हें प्रतीक्षा करनी पड़ी। ताकि हम भी वारिस हों और उनके साथ सम्मिलित हों। **इसलिए अब वे और हम मिलकर लक्ष्य तक पहुँचाए जाते हैं। नई वाचा में। हम सब अब मिलकर उससे कहीं बेहतर कुछ पाते हैं, जिसकी उस समय प्रतिज्ञा की गई थी।** इस्राएल में भूमि का कोई टुकड़ा नहीं, बल्कि एक स्वर्गीय स्वदेश, एक नई पृथ्वी, एक नए नगर के साथ।

अध्याय 12

आत्मिक मैराथन दौड़

जैसे किसी अखाड़े में, वैसे ही हम विश्वास के इतने सारे गवाहों और शहीदों से घिरे हुए हैं। वे सब हमारे लिए आदर्श हैं। इस बात का प्रमाण कि विश्वास और धीरज सार्थक हैं। **यद्यपि वे अब हमारे संसार में नहीं रहते, फिर भी विश्वास के द्वारा हम उनसे जुड़े हैं। इसलिए आओ, हम विश्वास की दौड़ न छोड़ें और उनसे रिले का डंडा थाम लें। आओ, हम दौड़ते रहें। जो रुकावट डालता है, उसे छोड़ दो और फेंक दो।** हर व्यर्थ और बाधा डालने वाला बोझ, जो हमें धीमा करता है, उतार दो। हर ध्यान भटकाने वाली बात और हर बहकावे की उपेक्षा करो। सबसे बढ़कर उस पाप को भी, जो हमें इतनी आसानी से उलझा लेता है और हमें ठोकर खिलाता है। हार मान लेना कोई विकल्प नहीं हो सकता!

आगे देखो, यीशु की ओर! न बाएँ देखो, न दाएँ। केवल उसकी ओर। वही सबसे बड़ा है। वह सब विश्वास करने वालों और विश्वास के नायकों में सबसे आगे खड़ा है। वह विश्वास में दौड़ा। लक्ष्य तक। वह विश्वास का अगुवा और सिद्ध करने वाला है। हमारे जीवन में उसने विश्वास उत्पन्न किया है और वह हमें लक्ष्य तक ले जाता है। किसी भी बात ने उसे इससे हटने नहीं दिया। लज्जा को उसने कुछ न समझा। भयानक **क्रूस** को उसने सहा। क्योंकि उसकी दृष्टि उस बड़े आनंद पर थी, जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था: परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठना। और यह आनंद कि अपने मृत्यु के दुःख के द्वारा हमें, बहुत से बेटों और बेटियों को, महिमा में ले जाए। उस पर और अधिक ध्यान दो, जिसे बुरे मनुष्यों का इतना भारी विरोध और प्रतिरोध अपने विरुद्ध सहना पड़ा। फिर भी वह लक्ष्य तक पहुँचा। यदि वह तुम्हारा आदर्श है, तो तुम शिथिल और थके नहीं होगे।

परमेश्वर विरोध और भेदभाव का उपयोग हमें बलवन्त बनाने के लिए करता है

तुमने अभी यीशु की तरह लहू बहने तक विरोध नहीं किया और विरोध के सामने टिके नहीं रहे। मसीहा यीशु से फिर जाने के पाप के विरुद्ध। तुम उस चेतावनी को भूल गए हो, जो तुमसे बेटों और बेटियों के रूप में बात करती है: "हे मेरे पुत्र, इसे आशीष समझकर स्वीकार कर, जब प्रभु तुझे वैसा ही नहीं रहने देता जैसा तू है। हियाव न छोड़, जब प्रभु को कभी-कभी तेरे साथ कड़ाई करनी पड़ती है। यह प्रेम से होता है, क्योंकि वह अपने बेटों और बेटियों से बिना शर्त प्रेम करता है। यदि तुम्हें कोई ताड़ना और शिक्षा मिलती ही नहीं, तो तुम स्वर्गीय पिता के बेटे और बेटियाँ हो ही नहीं।"

हमारे शारीरिक माता-पिता ने भी तो हमें शिक्षा दी। जब आवश्यक हुआ, तो कड़ाई से। उनकी बात भी हमने मानी। तो क्या हमें अपने स्वर्गीय पिता के अधीन नहीं होना चाहिए और उसकी शिक्षा स्वीकार नहीं करनी चाहिए? वह आत्माओं का पिता है। सब स्वर्गदूत उसकी सेवा में हैं, जो हमारी सेवा करते हैं। चाहे हम

इसे न देखें। हमारी शिक्षा उसके लिए महत्वपूर्ण है। वह उसकी चिंता करता है। इसके लिए सब कुछ उसके पास है। आओ, हम हृदय से उसके भले हाथ को हाँ कहें। चाहे कभी-कभी यह कठिन हो। तब हम जीवित रहेंगे। सदा के लिए।

हमारे शारीरिक माता-पिता ने अपनी मानवीय और भूल करने वाली क्षमता के अनुसार हमें शिक्षा दी और दण्ड दिया। केवल कुछ वर्षों के लिए। परमेश्वर हमें बिना भूल के शिक्षा देता है, जब तक हम लक्ष्य तक न पहुँच जाएँ। केवल आत्मिक बचपन में ही नहीं। तब भी, जब कोई बहुत समय से विश्वास के मार्ग पर है। क्यों? ताकि हम उसके और अधिक समान बनते जाएँ। उसके अनोखे ईश्वरीय स्वभाव और उसकी पवित्रता के। **परमेश्वर की ताड़ना भविष्य की तैयारी है और कभी भी अतीत का दण्ड नहीं है।**

ऐसी शिक्षा, जब कोई कठिन समयों से गुज़रता है, आनंद का कारण नहीं होती। बल्कि उदासी का कारण, यदि हम ईमानदार हों। पर उसमें हमारे जीवन में बिना रुके एक बहुमूल्य फल बढ़ता है, जो परमेश्वर को भाता है। बशर्ते हम उसकी शिक्षा से भाग न जाएँ। क्योंकि जब हम कठिनाइयों को उसके हाथ से स्वीकार करते हैं और उनमें धीरज का अभ्यास करते हैं, तो हम बदल जाते हैं। भलाई की ओर। चाहे हम स्वयं इसे न देखें या मानना न चाहें।

यशायाह 35 में लिखा है: "इसलिए ढीले हाथों और थके घुटनों को दृढ़ करो और सीधे मार्ग पर चलो"। नहीं तो थके हुए और डरपोक लोग मार्ग से भटक जाएँगे, बजाय इसके कि जो लँगड़े हो गए हैं, वे चंगे हों।

एक साथ बने रहो! यीशु के सब अनुयायियों के साथ मिलकर दृढ़ता से आपसी शान्ति के लिए संघर्ष करो। वैसे ही पवित्रता के लिए भी, हर पाप से घृणा करके और हर उस बात से दूर रहकर, जो परमेश्वर को अच्छी नहीं लगती। यदि हम पाप से घृणा न करें और उसे न छोड़ें, तो हम उस महान दिन परमेश्वर को अपने पिता के रूप में **नहीं** देखेंगे।

और एक दूसरे का ध्यान रखो कि तुममें से कोई परमेश्वर के अनुग्रह से बाहर न जिए और अपने उद्धार और जीवन को अपने आप पर और अपने कामों पर निर्भर न कर दे। या व्यवस्था में, पुरानी वाचा में, लौटकर न गिर पड़े।

ध्यान रखो कि एक दूसरे के विरुद्ध कड़वाहट और बुराई की कोई ज़हरीली जड़ न फूटे। पहले अनदेखी और हृदय में छिपी हुई। पर फिर, जब वह बढ़ती जाती है, विश्वासियों की सहभागिता को बेचैन कर देती है और बहुतों को बुरी तरह प्रभावित करती और ज़हरीला कर देती है।

तुम में से कोई व्यभिचारी न हो, जो विवाह तोड़ता है या स्त्रियों को बहकाता है। सब अपने जीवनसाथी के प्रति सदा विश्वासयोग्य रहें।

तुम में से कोई ऐसा न हो, जिसके लिए कुछ भी पवित्र नहीं। परमेश्वर तक नहीं। जैसे एसाव, जिसने एक साधारण दाल के भोजन के लिए अपना पहलौठे का अधिकार बेच डाला। थोड़ी ही देर बाद उसे पता चला

कि उसने कैसा लापरवाह काम कर डाला था। आँसुओं और उत्सुक संघर्ष के बावजूद वह अपने आचरण को पलटने और सच्चे मन-परिवर्तन तक नहीं पहुँचा।

हार न मानना क्यों सार्थक है

अपने उद्धार की स्थिति को वैसे पहचानो, जैसे परमेश्वर ने उसे तुम्हें दिया है। मसीहा के अनुयायी होकर तुम पुरानी वाचा के पास नहीं आए, जो उस समय डर और आतंक में आरंभ हुई। एक दिखाई देने वाले पहाड़ पर, सीनै पर, जिसे छुआ नहीं जा सकता था।

- जिस पर आग जल रही थी।
- एक बड़ा बादल वहाँ था।
- अन्धेरा और घोर अन्धकार उसे ढाँपे हुए था।
- जिसके चारों ओर एक भयानक आँधी गरज रही थी।
- जहाँ तुरहियों का ऊँचा शब्द सुनाई देता था।
- और एक ऊँचा और स्पष्ट सुनाई देने वाला शब्द।

सुनने वाले उन वचनों को और सह न सके और विनती की कि वे उनसे फिर न कहे जाएँ। यदि कोई पशु भी पहाड़ को छू लेता, तो उसे मार डाला जाना था। सोने के बछड़े की मूर्तिपूजक आराधना के पाप के बाद सीनै पहाड़ पर का सारा दृश्य इतना भयानक था कि मूसा ने भी माना: मैं प्रभु के क्रोध के डर से काँपता हूँ।

हे मसीहा यीशु के अनुयायियो: परमेश्वर ने तुम्हें एक अद्भुत नई वाचा दी है। तुम्हारे लिए कुछ बिलकुल नया, एक विशाल क्षितिज, खुल गया है। एक आत्मिक, अभी न दिखाई देने वाली वास्तविकता, जो पर हर उस बात से बढ़कर है, जिसकी हम कभी कल्पना कर सकते हैं। हम सिय्योन पहाड़ पर आए हैं, जहाँ परमेश्वर वास करता है:

- **जीवित परमेश्वर के नगर में, स्वर्गीय यरूशलेम में।**
- **स्वर्ग के दस-हज़ारों दूतों के पास, परमेश्वर के स्वर्गदूतों के पास, एक बड़ी आनंद भरी और पवित्र उत्सव-सभा में।**
- **सब छुड़ाए हुओं में से पहलौठों की सभा के पास, जिनके नाम स्वर्ग में लिखे हैं।**
- **स्वयं परमेश्वर के पास, सब मनुष्यों के न्यायी के पास, जिसने हमें पवित्र किया है और निमंत्रण दिया है।**
- **उन धर्मियों के पास, जो मर चुके हैं और स्वर्गीय लक्ष्य पर पहले ही पहुँच गए हैं।**
- **यीशु के पास, मसीहा के पास। नई वाचा के मध्यस्थ के पास।**

- **और उसके लहू के पास। यह हाबिल के लहू से कहीं बेहतर बातें कहता है, जो बदला लेने के लिए पुकारता था। मसीह का लहू हमें पूरी तरह शुद्ध और पवित्र करता है।**

ध्यान रखो कि तुम उसे न ठुकराओ, जिसने स्वर्ग से यीशु में तुमसे बात की है। जिन्होंने उस समय सीनै पहाड़ पर और जंगल में पृथ्वी पर से ईश्वरीय शब्द सुना, पर उसे ठुकरा दिया, वे बच न सके। यदि हम स्वर्ग से यीशु के द्वारा ईश्वरीय शब्द सुनें और ठुकरा दें, तो हमसे और भी अधिक लेखा लिया जाएगा।

उस शब्द ने उस समय पृथ्वी को हिला दिया। उसके बाद उसने भविष्यद्वक्ता हाग्गै के द्वारा पहले से कहा: "एक बार फिर मैं पृथ्वी को हिला दूँगा, पर केवल पृथ्वी को ही नहीं, बल्कि आकाश को भी।" इस हिलाए जाने से सब रची हुई वस्तुएँ मिट जाएँगी। **पर इस भूकम्प में तब प्रकट होगा कि क्या इस हिलाए जाने के सामने टिका रहता है और नहीं मिटता। हम मसीहा के द्वारा एक न हिलने वाला राज्य पाते हैं, जो सदा बना रहता है।**

इसके लिए हम हर दिन परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं! अनुग्रह के द्वारा हम इस परमेश्वर की सेवा करते हैं। आओ, हम यह वैसे करें, जैसा **उसे** भाता है, न कि हमें। उस भक्ति और श्रद्धा के साथ, जिसके योग्य केवल परमेश्वर है। डर में नहीं, पर आदर के साथ। क्योंकि व्यवस्थाविवरण 4:24 में पहले ही लिखा है: "हमारे लिए भी परमेश्वर, जिसके हम हैं, भस्म करने वाली आग के समान है। जलन रखने वाला परमेश्वर।" पर भस्म करने वाली आग हमें नष्ट नहीं करना चाहती – हम तो नई वाचा में जीते हैं –, बल्कि धन्यवाद के हमारे आत्मिक बलिदानों को स्वीकार करना चाहती है।

अध्याय 13

हमें कैसे जीना चाहिए?

सब विश्वासी भाई-बहनों से प्रेम को जीकर दिखाओ। इसे अतिथि-सत्कार में दिखाओ। उदारता से एक दूसरे को निमंत्रण दो। इस तरह तुम में से कुछ ने – बिना जाने – स्वर्गदूतों को ठहराया है। वे, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, हमारी सेवा में वहाँ सक्रिय हैं, जहाँ हमारा स्वर्गीय पिता उन्हें भेजता है। यदि तुम अपने घर नहीं खोलते और अतिथि-सत्कार नहीं करते, तो तुम स्वर्गदूतों के आगमन से चूक सकते हो।

बन्दियों को स्मरण करो और **उनकी देखभाल करो**। और वह भी ऐसे, मानो तुम उनके साथ बन्दीगृह में हो। उनको भी स्मरण करो, जिनके साथ कालकोठरी में बुरा व्यवहार किया जाता है और जिन्हें सताया जाता है और जिन्हें यह अपनी देह पर सहना पड़ता है।

विवाह की वाचा और विवाहित जीवन का आदर और मूल्य किया जाए। साथ जीने की हर बात में। विवाह का बिछौना और यौन-संबंध के आनंद केवल पति-पत्नी के हैं। यौन-संबंध स्वेच्छा से और बिना ज़बरदस्ती के हो। विवाह की वाचा को दृढ़ करने के लिए। व्यभिचारी और परस्त्रीगामी, जो दूसरी स्त्रियों या पुरुषों के साथ यौन-संबंध से अपनी या किसी और की विवाह की वाचा तोड़ते हैं या विवाह की वाचा के बिना मनमाना यौन-संबंध रखते हैं – उनका परमेश्वर न्याय करेगा, बिना कोई ढील दिए।

धन के लोभ के बिना जियो और काम करो। जो तुम्हारे पास है, उसी में संतुष्ट रहो। अधिक से अधिक नाशवान वस्तुएँ पाने की चाह रखने का कोई अर्थ नहीं। अभाव, गरीबी और भूख के बावजूद एक बात बनी रहती है – ईश्वरीय वचन: **“मैं तुझे नहीं भूलूँगा और तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए हम साहस और दृढ़ता से कह सकते हैं: “प्रभु हमारा सहायक है। हमें डरने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य हमारा क्या कर सकते हैं?”**

उनके परिश्रम, उनके विश्वास और उनकी विश्वासयोग्यता से साहस पाओ, जिन्होंने तुम्हें वचन, परमेश्वर का सुसमाचार, सुनाया। देखो, कैसे वे अपने जीवन के अन्त तक विश्वास में बने रहे। उनके आदर्श पर चलो।

यीशु मसीह, हमारा मसीहा, सदा एक सा रहता है: उसमें जो वह है, जिसका वह प्रचार करता है और जिसकी उसने प्रतिज्ञा की है। **वह कल, यानी अपने पृथ्वी के समय में, जैसा आज हमारी दिनचर्या में है और सारे अनन्तकाल तक भी, उद्धार के इतिहास के लक्ष्य पर, वही विश्वासयोग्य और सच्चा प्रभु है।**

एक नई आराधना

तरह-तरह की और पराई शिक्षाओं से अपना ध्यान भटकने न दो और उनमें उलझे न रहो। वे तुम्हें मसीहा के पीछे चलने से खींचकर दूर ले जा सकती हैं। कुछ खास भोजनों के द्वारा विश्वास में बढ़ना चाहने का कोई

अर्थ नहीं। ऐसी बाहरी और दिखाई देने वाली बातें पुरानी वाचा के स्वभाव का भाग थीं। वह बस व्यर्थ था। हमारा हृदय परमेश्वर के अनुग्रह से दृढ़ और बलवन्त होता है। क्योंकि हमारी एक आत्मिक, बेहतर, पर अनदेखी वेदी है। उसी से हम खाते हैं। हम लाक्षणिक अर्थ में, आत्मिक रूप से और विश्वास में मसीहा के अनुग्रह और उसकी अनदेखी उपस्थिति से खाते हैं और उसका आनंद लेते हैं। यह विशेषाधिकार वे नहीं जानते – उनका इस पर कोई अधिकार भी नहीं –, जो अभी भी दिखाई देने वाले मन्दिर में अपनी सेवा करते हैं।

पापबलि के उन पशुओं को, जिनका लहू महायाजक पवित्रस्थान में ले जाता है, छावनी के बाहर जलाया जाता है। इसी तरह यीशु ने भी यरूशलेम नगर के बाहर दुःख उठाया और क्रूस सहा। जब उसने अपने बहाए हुए लहू के द्वारा हमें शुद्ध और पवित्र किया।

इसलिए आओ, हम उसके पास बाहर निकल चलें। आओ, हम पहली वाचा की पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह पीछे छोड़ दें। चाहे इससे निन्दा सहनी पड़े और इसकी कुछ कीमत चुकानी पड़े। उसकी निन्दा उठाना कभी व्यर्थ नहीं होता।

आओ, हम आगे की ओर, हाँ ऊपर की ओर देखें। क्योंकि पृथ्वी पर हमारा कहीं कोई स्थायी नगर नहीं, जिसमें हम घर पर हों। हम परदेशी हैं और ऐसे ही हमें देखा भी जाता है। हम आने वाले नगर की ओर यात्रा पर हैं। स्वर्गीय यरूशलेम, हमारे महान राजा का नगर, पहले से हमारी प्रतीक्षा कर रहा है।

जब हम इस आशा में जीते हैं, तो आओ, हम परमेश्वर को स्तुति और धन्यवाद के आत्मिक बलिदान चढ़ाएँ। हर समय। हर स्थान पर। अकेले और मिलकर। दिखाई देने वाली वेदी पर पशु-बलि नहीं। नहीं। धन्यवाद, स्तुति और आराधना के बोले और गाए हुए शब्द। याद रखो: परमेश्वर अपनी प्रजा की स्तुति में वास करता है।

जब तुम ऐसे बलिदान चढ़ाते हो, शब्दों से, तो भौतिक बलिदानों को किसी भी हाल में मत भूलो – जिनसे तुम ज़रूरतमंदों की भलाई करते हो या आर्थिक रूप से सहायता करते हो। ऐसे बलिदानों से, जिनकी तुम्हें कुछ कीमत चुकानी पड़ती है – समय, धन, शक्ति – और जिनका अर्थ शायद त्याग हो, हमारा परमेश्वर विशेष रूप से प्रसन्न होता है। जो ऐसे बलिदान चढ़ाने को तैयार नहीं, उसके स्तुति और धन्यवाद के बलिदान का मूल्य बहुत कम है।

तुम्हारे अगुवे

अपने आत्मिक अगुवों के पीछे चलो और लगातार उनकी आलोचना मत करो। वे तो बस तुम्हें खतरों से बचाना चाहते हैं, ताकि तुम विश्वास में स्वस्थ और दृढ़ बने रहो। उन्हें परमेश्वर के सामने लेखा देना होगा कि उन्होंने यह काम कितनी अच्छी तरह और कितनी लगन से किया। **इसलिए उनकी सेवा का मूल्य समझो**

और उसका आदर करो। तब वे इसे आनंद से कर सकेंगे। यह तुम्हारे लिए बहुत लाभदायक होगा। इससे कहीं बेहतर, कि वे इसे आहें भरते हुए या केवल कर्तव्य समझकर करें।

हमारे लिए प्रार्थना करो! हम सब बातों में वही करना चाहते हैं और वैसे जीना चाहते हैं, जैसा परमेश्वर को भाता है। मेरे लिए और भी अधिक प्रार्थना करो! तब मैं शीघ्र फिर तुम्हारे पास आ सकूँगा।

इब्रानियों की पत्री का सारांश:

शान्ति के परमेश्वर ने हमारे प्रभु यीशु को क्रूस की लज्जा भरी मृत्यु से बाहर निकाल लिया है। उसके लहू ने एक नई, बेहतर, हाँ अनन्त वाचा की नींव रखी है। वह अपनी भेड़ों का महान चरवाहा है। अपने बहुत से अनुयायियों को वह शीघ्र स्वयं मृत्यु से बाहर निकाल लाएगा। तब, जब वह फिर आएगा। तब वह उन्हें अनन्त स्वदेश में ले जाएगा, जैसे एक चरवाहा अपनी भेड़ों को। वह उन्हें जीवन के सोते के पास चराएगा।

यदि परमेश्वर ने यीशु को मृत्यु से बाहर निकाला है, तो वह तुम्हारे जीवन में भी साथ रह सकता है और काम कर सकता है, और यही चाहता भी है। वह – और इसी के लिए हम प्रार्थना करते हैं – हमें भले कामों के लिए प्रेरित कर सकता है और उनके लिए तैयार कर सकता है। इस तरह हम उसकी इच्छा पूरी करते हैं। यह सब केवल यीशु मसीह के द्वारा वास्तविकता बन सका। उसकी, हमारे अनोखे उद्धारकर्ता की, महिमा और आदर सदा होता रहे।

मेरी पत्री की चेतावनियों को सह लो! मैंने तो तुम्हें थोड़े शब्दों में लिखा है और यथासंभव संक्षेप में बात कही है। इससे कहीं अधिक लिखा जा सकता था।

हमारा भाई तीमुथियुस छोड़ दिया गया है। हम मिलकर शीघ्र तुम्हारे पास आएँगे और अंततः तुम्हें फिर देखेंगे। अपने सब आत्मिक अगुवों को नमस्कार कहना। बस सब पवित्र लोगों को, जो मसीह में हैं। इटली के पवित्र लोग तुम्हें नमस्कार कहते हैं। हम एक दूसरे के हैं! हम साथ खड़े हैं!

अनुग्रह तुम सब के साथ रहे! आमीन।

इस तरह की और पुस्तिकाएँ आप इस वेबसाइट पर पा सकते हैं: www.hans-joerg-ronsdorf.de